

भाखल दरिया साहेब सत सुँत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।

ग्रन्थ सहस्रानी

(भाखल दरिया साहिब)

बेबाहा निज जानहु, जाकर बहा न होय।

आदि अन्त गुन सत्य है, दूजा और न कोय॥१॥

बेबाहा बेकीमती है, शिफ्त कहा नहीं जाये।

जरा मरन ते रहित है, सोगुन कहा बुझाये॥२॥

शाहिजादा साहब धनी, मनी करो यह दूर।

आशिक और माशूक है, मिलना हाल हजूर॥३॥

ताहि साहिब से दरश है, परसि चरण लवलीन।

धरे धोखा कोई मूढ़ जन, सो जीव सदा मलीन॥४॥

सतगुरु गमि ग्यान करुँ, विमल सदा परकाश।

मम सतगुरु को दास हौं, पद पंकज की आश॥५॥

अंजन गुरु पद कंज है, मंजन करु दिन रात।

सदा सर्वदा प्रेम रस, इमि मोतीन की पाँत॥६॥

झलक पलक मोती घना, औ हीरन की जोति।

देखहिं सेत सरूप सभ, नहिं कनक नहिं पोति॥७॥

गुरु कहं सरबस दीजिये, तन मन अर्पे शीश।

गुरु बहिया गुरुदेव है, गुरु साहिब जगदीश॥८॥

मेरो नाम तो दास है, दरिया दर के पार।

जरा मरन ते रहित है, सो गुन कहिए सार॥९॥

बारिध अगम अथाह जल, वोहित बिनु किमि पार।

कनहरिया गुरु ना मिला, बुड़त है मजधार॥१०॥

सुक्रित प्रेम ही हीत करु, सतवोहित पतवार।

कनहरिया सतगुरु ग्यान है, उतरी जाहु भव पार॥११॥

दरिया दिल दरपन करो, परसन ऐस अनूप।

ऐन ऐना में दीसे, देखि बिमल एक रूप॥१२॥

रज देखे राजी हुआ, बाजी चिन्हें न काल।

और गये पर बोधने, बिसरी घर की माल॥१३॥

सो गुरु चछु बिहिन हैं, चिन्हि परे नहिं दीन।
 दिन मनि दिन प्रगट देखो, घट में कर्ता कीन्ह॥१४॥
 जो करता घट में होते, घट ही में मेघ परकाश।
 काहे साली सुखी परे, जब चाहे तब पास॥१५॥
 द्वैत कहे अद्वैत कहे, फेरि करे गगन की आश।
 डोरी लागी गगन में, पलक नहिं विश्वास॥१६॥
 राम कहे रमिता भया, रा रा राम की भांति।
 कवि कथा अद्भुत कहे, चिन्हि न परिवो पांति॥१७॥
 बुंदे परे बुल्ला हुआ, फूला माया अनंग।
 राम कृष्ण गुण अतीत है, अन्त हुआ फिर भंग॥१८॥
 बीज से बीज उत्पन्न किया, सो बीज सबको दीन्ह।
 जीव जीव सभ जीव हैं, ब्रह्म है इतने भीन्ह॥१९॥
 नागरी ते आगरी भली, नागरी सागरी संग।
 बुन्द परा एह सिन्धु में, कौन परिखे रंग॥२०॥
 मैन मजीठ के माट में, बदल गया सो रंग।
 गया सफेदी स्याह घर, मनमाया को संग॥२१॥
 शेषनाग देव वर्षसही, सापिनि मुखहीं अनंद।
 ज्यों चकोर चित लागिया, देखि शर्द को चन्द॥२२॥
 अहिपति सुरपति काम रिपु, शारद और सुक देव।
 कहत बिते जुग कल्पलहीं, मन माया को भेव॥२३॥
 का घर ते जीव आइया, कवन पवन को मूल।
 फूल ते फल यह लागीया, बढेवो हमारे कूल॥२४॥
 नेऊरी नाचे शीश पर, नीचे नाचु भुवंग।
 ए दोय जगत बनावहिं, मिलि गया एक रंग॥२५॥
 मोतंगी मद चिन्हि के, कल्प केदली फूल।
 कंज कपूर एक संग हैं, ताहां काया को मूल॥२६॥
 माया मिथुन माखन बना, चाखत सर्प अनेक।
 ज्यों पोवा पाला करे, वांचा कोई विवेक॥२७॥
 सोवत जागतराम भला है, भला लगा इन्हि साथ।
 मुकुर बीच मूरति भली, किमि ना पसारेव हाथ॥२८॥

सरग पताल ब्रह्मंड लहे, सर्व सर्व वियापिक राम।
 घट घट करता राम हैं, शिव शक्ति विस्माम॥२६॥
 हमहिं राम सो प्रीति हैं, अगम निगम की बात।
 हम दोनों एक हैं, इमी शीतल उन्हीं तात॥३०॥
 शीतल सर्वदा प्रेम रस, पद पंकज को ध्यान।
 राम रंग गुन तपत है, कवि कथा विख्यान॥३१॥
 जो जामिन भला चाहे, यम के काह बशाए।
 चारों युग चीत तौलिके, अमृत कूप नहाए॥३२॥
 कहो सुरति कहाँ बसे, कहाँ जीव को मूल।
 साढ़े तीनि के मध्य में, अग्र संजीवन फूल॥३३॥
 दरिया दरपन दरस हैं, परसत सदा सनीप।
 अग्र घानि घन बुंद हे, कबहि ना होत अनीप॥३४॥
 माया राया आस की, साधु बड़े प्रमीन।
 आपन गुन विचारि के, कबही न होए अधीन॥३५॥
 दधि सुत से अमृत पीवे, रवि सुत आऊ ना पास।
 चला मार ब्रह्मंड के, पुरन प्रेम प्रकाश॥३६॥
 धरती बरसे सूरज पर, गगन रहा घर छाए।
 तहाँ दीपक को तेज है, जल ये नाहिं बुताए॥३७॥
 धरती तो माया भइ, बुंद है पुरुष आकाश।
 बिना प्रेम बरिसे नहिं, इमी करि भया निराश॥३८॥
 शक्ति के प्रेम है पुरुष पंह, पुरुष शक्ति के पास।
 सदा जुगल एक संग हैं, रंग परिखही दास॥३९॥
 प्रेम बसे रसना में, नयन कमल भृंग बास।
 बानी सुधा समेत है, इमी करि सुमरहि दास॥४०॥
 दास सोई दरसन करे, परसत सतगुरु प्रेम।
 जैसे अलि पंकज पर, तेजि सकल भ्रम नेम॥४१॥
 अर्थ सभे निअर्थ नहिं, बोलत चतुरी वैन।
 जौ मनि आवै हाथ में, परखे अपने नैन॥४२॥
 कहि सुनी सभ कहत है, सुनि पाए जेहि कान।
 दरिया देखि जो कहे, सो बदिये प्रमान॥४३॥

स्रवन ग्यान चित में बसे, संध्यासन करु नेम।
 कहे सुने हिय में बसे, दरिया दरसन प्रेम॥४४॥
 वारिज वारि के ऊपरे, अली मंदिलमे बास।
 होत प्रातः सुपट खुले, भान तेज प्रकाश॥४५॥
 चारि अवस्था तीनि गुन, पांच तत्व है सार।
 प्रेम तेल तुरी बरे, भया, ब्रह्मा उजियार॥४६॥
 सलील सर्ग समूह अति, पुंज पुंज भ्रम जाल।
 कुंज कुंज लता लगे, गिरा विविध मन काल॥४७॥
 काया द्रुम माया लता, लपटि रहा चहुँभाँति।
 मधुकर मालति घानी में, पियत है दिन राति॥४८॥
 अलि पंकज के तेजि के, विषि माला में बास।
 प्राण विलग जब होइ हैं, समुझ परी जम त्रास॥४९॥
 काया में अम्बर लगा, महिमंडल के पार।
 सुरति डोर जब चेतिए, ज्यों मकरी मंह तार॥५०॥
 प्रेम धगा अति सुबुक है, सुन्दर साधन हेत।
 ज्यों मकरी महि तार गही, टुटे परी अचेत॥५१॥
 गागरी ऊपर गागरी, चोली ऊपर हार।
 सुरी ऊपर साथरा, तहां बुलावे यार॥५२॥
 यार मेरा महबूब है, आशिक दिल के पास।
 या दिल वादिल देखिए, महल बना एक रास॥५३॥
 कृष्ण कवन बड़े काम के, बाम धाम रचि लीन्ह।
 पगु चांते माती फिरे, हारी बाजी जीति लीन्ह॥५४॥
 संशय सागर शक्ति है, भक्ति भली परमीन।
 पर बाधा राधा भइ, पकड़न्हि जल का मीन॥५५॥
 ब्रह्म फूटे फाटे नहीं, टाटी माया अनूप।
 कहिं राव कहिं रंक है, कहि सभनि का भूप॥५६॥
 चला बटोही बाट में, खाट लिए सिर बोझ।
 धीमर जाल लिएफिरे, बाझा वन का रोझ॥५७॥
 बाझे झक सलील में, चारा चुगन जाय।
 वाह बोल वैरी भया, ऐना परा भुलाए॥५८॥

ऊपर तुमरी चिकनी, भीतर विष की लोय।

साधु ना होते तो भला, चोर सो चोर होए॥५६॥

तुमरी चारो तुल हैं, तलफा मीन अकाश।

घर छोड़े घर पाइया, छूटा भूख पियास॥६०॥

उल्टा कुम्भ बुड़े नहीं, चक्कर पलटे जोग।

माया मंदिल के बीच में, छुटा भरम का भोग॥६१॥

सावन केरी बादली, छांह हुआ जग मांह।

बाहर रहा सो उबरा, भीज गया घर मांह॥६२॥

सावन सेहरा शक्ति है, भक्ति बसे यह पूर।

गुरु मुख ग्यान न पावही, अंत विगुरचन कूर॥६३॥

सावन केरा सेहरा, बुंद परा असमान।

तीन लोक विष्णों हुआ, गुरु नहीं लागा कान॥६४॥

अजर लोक अजर मनी, प्राण पिण्ड नहीं भीन्न।

कहे दरिया दरसन सही, मम ताहि चरन लवलीन॥६५॥

आदि सनन्दन हर कहें, महि पर मगन मुरारि।

मैन मनोरथ अर्थ है, जहां वारिज तहां वारि॥६६॥

मन लीला नौ बार हैं, ब्रह्म कहे सब कोय।

महिमंडल के अन्तरे, यह गुन परगट होय॥६८॥

जैसे दिन मनि दिन में, छवि छायो सभअंग।

इमि निरगुन कंह जानिए, पुरुष कबहि नहीं भंग॥६९॥

अहे कल्पना काल हैं, लाल लोभानेऊ नैन।

नहि शिव नहीं शक्ति है, जगत जीव कंह ऐन॥७०॥

ग्यान ध्यान सुख सम्पदा, जोग विराग विवेक।

पालहिं सकल संसार के, जगत भगत गुरु एक॥७१॥

मीन मांस बारुन पीवे, जीवे जगत मंह हीन।

महा कल्पना कष्ट है दुनिया गया औ दीन॥७२॥

नरक कुण्ड के बीच में, गोता खाहीं अनेक।

विवेकी जन कोई बाचिहैं, जाके सतगुरु एक॥७३॥

ग्यान छुरी निश्चय गहों, काटि करम कलि पाप ।
 सतसरन सतगुरु सेवा, मेटे कलि मल ताप ॥७४॥
 तपत गया कल्पना दुटा, दुरमति मेटा शरीर ।
 शाली सुखानी पानी बिनु, बरिसा बुंद गम्भीर ॥७५॥
 जहां तहां जल सुखिया, अनल भान समीर ।
 एक दरिया नाहिं सुखिया, सब नदियन का मीर ॥७६॥
 खारो दरिया हद है, बेहद हैं आसमान ।
 शब्द विचारे साधुजन, दोय तजि पुरुष अमान ॥७७॥
 दरिया बरसे गगन ते, मगन भया संसार ।
 उपजत विनसत तीन जना वार कहे भापार ॥७८॥
 माया जनक गृह आईआं, प्रकट भई तीनि लोक ।
 सोभा सकल संवारि के, दियो सभन्हि को सोक ॥७९॥
 धनुष तुरे मंगल हुआ, आनन्द सभ नर नारी ।
 भई विदाई यह अवध कहं, ऐसी गुन की वारी ॥८०॥
 शोभा सुन्दर सर्व मनि, धन करता तोहि किन्ह ।
 नारी नयन भरी देखहिं, सभका बदन मलीन ॥८१॥
 जेतीक रानी महल में, संग सहेली धाम ।
 वाके कोई नहिं तुलहिं, धन विधि रचासो वाम ॥८२॥
 राजतिलक सभ दिजिये, बैठु सभे सुख चैन ।
 ऐंठि दिया यह पैठि के, कठिन कल्पना वैन ॥८३॥
 कनक कोटि के ओट में, बीस भुजा दस कीश ॥८४॥
 डारेवे सोग समीर सम, बैठी दिल कहं फेरी ।
 भया कल्पना अवध में, कैकई की मति चेरी ॥८५॥
 दशरथ तन कहं त्यागिया, अवटे जल बिनु मीन ।
 दिन दिवाकर बुड़िया, रजनी चंद मलीन ॥८६॥
 दंडक वन मंडप रचो, राम लषन संगसिया ।
 मन मृगा फल खात है, देखो हमारे पिया ॥८७॥
 बान धनुष कर जोरिया, भया अलोपे वोत ।
 मन परिपंच ना जानही, कहाँ मृगा कहाँ खेत ॥८८॥

राजकाट मद रावण, भलि मति गइ भुलाय।
 सीता सती समुद्रसम, परे लहरि में आय॥८६॥
 आइ भवानी भवन में, प्राण गवन तब कीन्ह।
 चरित्र चातुरी मति भली, गति विरला केहु चिन्ह॥८७॥
 चन्दन वृक्ष यह चौक पर, पत्र भया सब छीन।
 सागर को जल सुखिया, अवटे जल बिनु मीन॥८८॥
 सागर कबही न सुखिया, वलु द्रुम होऊ निपात।
 झूठो सपना कहत कहि, दसो मटुक है पात॥८९॥
 चंदन वृक्ष तुम एक कहि, दसो मटुक है पात।
 लंका सागर सूखिया, जीवन्हि को घात॥९०॥
 रावन कटक कृमि भए, जरे दीपक के पासा।
 ज्यों भुअंग मनि महि धरे, करे कृमि कहं ग्रासा॥९१॥
 खंड-खंड ब्रह्मंड ले, कवन करे यह साधी।
 त्रिगुन लीला पलेटी के, लीन्ह सभन्ही कहं बाधी॥९२॥
 आदी निरंजन ज्योति से, प्रथमहिं किन्ह प्रसंग।
 सो अब किमिकरि वांचिहे, जीव के संग अनंग॥९३॥
 विरला बाचहिं मोहबस, माया मिथुन के पास।
 सतगुरु दया जबहिं करे, तब मेंटे तन त्रास॥९४॥
 नहिं कारन नहिं कर्म है, जात हिए में छेद॥९५॥
 सिख जोरु का जगत है, भगत कोई निरलेप।
 करे सिखावन साधु कह, जैसे जल मीन खेप॥९६॥
 अगम अथाह जल छोड़िके, उलटा किन्हों गवन।
 कहां सलीता कहां सिन्धु है, जनक सुता कह रवन॥९७॥
 अरथ बुझे तो सरस हैं, बरसत प्रेम आधार।
 ज्यों पुरइन के पात पर, जल के कवन विचार॥९८॥
 भक्ति विवेक विचारिके, करो दीपक दृढ़ ध्यान।
 अति अधीन लिन्ह पद पावन, परिमल घानि अमान॥९९॥
 डरगहि सो रस चाखही, गरुर गर्व करे बात।
 रहे कुजोगी जोग में, भोग करे दिन रात॥१००॥

सुखमनि सापिनि संग है, मन अनंग हैं भोग।
 खादि अखादि समेटि के, कहा तुम्हारे जोग॥१०४॥
 जहां भोग तहां रोग है जहां ग्यान तहां योग।
 जहां चकमक तहां आग है, जहां माया तहां सोग॥१०५॥
 आतम पोखन पालिए, औरों के कछु देत।
 आवत जात नासंग में, वोइए बीज सुखेत॥१०६॥
 बिनु दिये धन जात है, देखो जगत की रीति।
 आपु गया तो धन गया, ऐसी झूठी प्रीति॥१०७॥
 सतगुरु को मत अंत कहं, जंत्र हुआ गुरु ग्यान।
 मुक्ति पदारथ मत भलो, अमी पदारथ ध्यान॥१०८॥
 चारि करि एह कर्म है, जानु मरम कोई संत।
 चौमुख चारो दीप है, अग्र बसत है कंत॥१०९॥
 सोई सुहागिनि पिया मुख, दुःख सुख त्यागवो रोग।
 खसम खुशी जब पाइये, भला बना है योग॥११०॥
 खरलादी लादे फिरे, साधन नाहिं गुरु ग्यान।
 स्वान सुकर भव भरम है, बृषभ की मति आन॥१११॥
 साधु निन्दा दुःख सरस है, सुख की वारी वाट।
 करे कल्पना कल्पहिं, सहे जम्हं की साट॥११२॥
 शील संतोष ऐसा चाहे, भला रचो है धाम।
 पर दुख देखि हरसे नहिं, रमिता चिन्हे जो राम॥११३॥
 अमी जो बरसत हर्ष अति, छन छन व्रीगसे प्रेम।
 कहे दरिया सोई साधु है, तेजी सकल भर्म नेम॥११४॥
 कर्म किए क्रिमि हुआ, नैन बिहुना सोय।
 गदहा और दादुर हुआ, भक्ति महातम खोय॥११५॥
 अघ ऊर शूल सागर हुआ, आगर मति गई भूल।
 सतगुरु से परचे नहीं, रहा माया में फूल॥११६॥
 माया भली है साधु की, साधन करु गुरु ग्यान।
 ज्यों आवे त्यों फेरिए, चलना साझ विहान॥११७॥
 माया चेरी है वंस की, जो मता बुझे गुरु ग्यान।
 सतगुरु से परचे करे, खर्चे खाय अमान॥११८॥

द्रुम चारि औं शाखा अठारह, सो सभ मुनि के पास।
 कथा रामायन बाल्मीकि, औ कवि तुलसी दास॥११६॥
 त्रीया जगत में अनंत हैं, जग जननी को मंत।
 गोपीन का एक पेखना, सुर नहिं पायेवो अंत॥१२०॥
 कवि भला भाजन भला, औ भला कही गुरु ग्यान।
 सेंधु भला मेदनी भली, भला है संत सुजान॥१२१॥
 दरिया अगम गम्भीर है, सलिता सकल समाय।
 चिड़ियां चोंच भर ले गई, यों कबीर गुन गाय॥१२२॥
 वोय दरिया जनि जानहु, जो बांधा रघुवीर।
 दरिया लछ गम्भीर है, कथि के कहा कबीर ॥१२३॥
 मुल मंगल एक पवन है, पैठत जीव के साथ।
 नख शिख सभे बनाइया, रचा नसन उर माथ॥१२४॥
 पांच तत्व गुन तीनि हैं, तामे पंछी पवन।
 अद्भुत कला बनाइया, दियो झरोखा नैन॥१२५॥
 जल कुकुही तलहीं रहे, किमी करि सिन्धु में जाये।
 कविता कवि अनुरागहिं कहें, राम चरित्र गुन गाये॥१२६॥
 राम चरित्र चौगुन कहें, चारो वेद विचार।
 वेद में भेदहिं देखिये, कर्ता इन ते पार॥१२७॥
 कर्ता को गुन सत है, अनन्त कहिए सो जीव।
 जीव शीव एक संग है, अजर तुम्हारो पीव॥१२८॥
 अक्षय वृक्ष छवि छाइया, सखा पत्र रचि लीन्ह।
 ऐसो साहब सत हंही, सतगुरु परचे दीन्ह॥१२९॥
 आदि अंत गुन रहित है, सोगुन धरा शरीर।
 सो वामन वलि जांचिया, दशरथ सुत रघुवीर॥१३०॥
 वामन का वामन रहा, नहि बड़ लागु आकाश।
 इन्द्रजाल अति जगत में, कहि कवि कथा प्रकाश॥१३१॥
 जैसे नट की नाच है, पट खोले यह आकाश।
 महाचरित्र चित भ्रम है, लागत सभन्हि कह सांच॥१३२॥
 विषेभाव रस मांगत, त्यागत संत सनेह।
 चौरासी के भवन में, फेरि फेरि धरिहें देह॥१३३॥

मुरति में सुरति बसे, निरति रही अमान ।
 दिल दरिया दरसन देखिये, तामे पद निर्वान ॥१३४॥
 ज्यों फनिक छीत पर चले, वोह फनि पति नहिं होय ।
 भेष भर्म टाटी कियो, जीव बन्धन के सोय ॥१३५॥
 धीमर पासी वेश्या, तीनों की मति काल ।
 वोए सरबस हरि लेत हैं, वोए डारि देत जम जाल ॥१३६॥
 भेष भर्म है काल का, नाहिं संत का मंत ।
 काल नेमि जो रावणा, करत विगुरचन अंत ॥१३७॥
 शब्द शरासन बान है, नीफर गया ऊरपार ।
 घायल हुआ घुमत फिरे, भरमे भवन बेकार ॥१३८॥
 जुझन की गति और है, घायल की गति और ।
 सतगुरु मारा बान से, रहा जुलाहा ठौर ॥१३९॥
 ठवर रहे ठनकत फिरे, कर गहि कसे कमान ।
 गज वेली की गासिया, मांडी रहे मैदान ॥१४०॥
 सुर सर्व गुन अतित है, सदा राखे मन थीर ।
 मुख पर तीर विराजहिं, कोटिन में एक वीर ॥१४१॥
 दरिया अगम गम्भीर है, सतनाम है सार ।
 कवि थाके मुनिवर कहे, वेद ना पावहिं पार ॥१४२॥
 दरिया दिलमनि मोम है, मेहरबान महबूब ।
 आशिक हुजिए तासु पर, नैन झरोखा खूब ॥१४३॥
 या मरकब महजिद है, कुतुवा करो नमाज ।
 खाक से पाक बनाइया, सकल तुम्हारो साज ॥१४४॥
 जो अजूद सफा करे, कफा न रहे शरीर ।
 पीर पंजा सिंर ऊपरे, साहब सबका मीर ॥१४५॥
 दुरबेसा दर जानिए, इश्क तुम्हारा नाम ।
 हरदम तस्वी फेरिए, पल पल आठो जाम ॥१४६॥
 नहिं चर्व कहं चाखिए, फरजे रोजा हजूर ।
 खाकी आवी वोए नहिं, साहब सदा महंमूर ॥१४७॥
 सीप शक्ति जल में बसे, वा जल बसे अकास ।
 सुपट खोली रति मागिया, रतनागर के पास ॥१४८॥

बीनु पारस मोती नहिं, सकुच मीन है भिन्न।
 पारस में पारस दिया, रतनागर को चिन्ह॥१४६॥
 कपूर बास कैसे हुआ, कहु केदली परवान।
 पारस पवनहिं जानिए, पंडित चतुर सुजान॥१५०॥
 ग्यान सतगुरु पारस हुआ, कंद्रप बुंद बनाए।
 तब कपुर केदली भली, जावन युक्ति बनाए॥१५१॥
 तब कपुर केदली को अंग है, फल नहिं लागा फूल।
 सदा सुहागिनि प्रेम रस, शब्द सजीवन मूल॥१५२॥
 विरला कवि कोई जानहि, विरला संत सुजान।
 विरला पंडित वेद मथि, विगति रहित अमान॥१५३॥
 आनन्द मंगल मूल है, मारहि दृष्टि घन छाए।
 गंधारी गंध खुलि परें, तबे कपूर झरि लाए॥१५४॥
 कहु हीरा कैसे भया, कीरा धरे शरीर।
 वाको किमत विचारहिं, सो ग्यानी मति धीर॥१५५॥
 हीरा नख पंछी भली, रतनागर के तीर।
 बुंद सेवाती पाइया, ऐसा निर्मल नीर॥१५६॥
 चोच खोलि ऊपर लिया, पिवे पिऊषन जानि।
 कंद्रप कला विचारहिं, यह हीरन की खान॥१५७॥
 चारो खानी हीरा कहि, महि पर उपजे सोय।
 ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य है, शुद्र समेता होय॥१५८॥
 खोटा कपट मोटा मन, जोती मलीना होय।
 निरमल निरखही प्रेम से, नाम सजीवन सोय॥१५९॥
 कपट ओट का घट फूटा, लटका भव में सोय।
 कोयला कपट भीतर तरे, निरखी परा है सोय॥१६०॥
 कोयला खाय जल पीवही, जल में गया समाय।
 छूछे उदर उदक भरा, तव निर्मल होय जाय॥१६१॥
 परा कुभांति यह माति के, जग में बड़े कुलीन।
 कुल की कानि ना राखिहें, सो हीरा परवीन॥१६२॥
 वोय हीरा जनि जानिए, जौ वणिज करै व्योपरा।
 यह हीरा निजु हंस है, परसत है तत्वसार॥१६३॥

गज मुक्ता गज मस्तक, चुँगल स्वाती संग।
 उपजे निर्मल प्रेम रस, होत कबही ना भंग॥१६४॥
 कुंजल काया साधु की, स्वाती निर्मल ग्यान।
 सतगुरु का परसंगा से, पारस लगा अमान॥१६५॥
 दारुन विष भुवंग है, डसे विराना अंग।
 कैसे मनि उन्ह पाइया, कहु ताके पर संग॥१६६॥
 सो पोवा पानी लिया, मिलवे आपनी जाति।
 विरले विष प्रति पालिया, तब रतनों की पांति॥१६७॥
 करे जोग भोग कहं त्यागे, रोग ना रहे शरीर।
 दिन मनि दिन विनवन करे, जानि विरानी पीर॥१६८॥
 सहस वर्ष सरूप में, रूप गया तब फिर।
 माते विष भौ बावरे, मिला सेवाती नीर॥१६९॥
 पियत जल जावन हुआ, मनि उपजी निरलेप।
 विष भाजन औ भर्म सब, दिया तुरंत ही खेप॥१७०॥
 वोए भुवंग के विष नहिं, मनि उपजे मुख आए।
 सो जोगी यह जोग में, भोग रोग मिटी जाए॥१७१॥
 काम क्रोध और वामरस, विषि भजन कह खोय।
 पूरा जोगी जोग में, मुक्ति पदारथ होय॥१७२॥
 सतगुरु शब्द स्नेह करी, नेह ना विलगे भीन्न।
 पद पावन परसत रहें, यही तुम्हारो चिन्ह॥१७३॥
 गांसी लागी मोह की, निकले कौन उपाय।
 मिले चुम्बक चित साचकरि, तब पीरा मेटि जाय॥१७४॥
 चुम्बक तो सत् शब्द है, वसे जीव के साथ।
 करै गवन जब भवन ते, पल में होय सनाथ॥१७५॥
 जोगी या तन कसिके, रेटे जगत कह त्यागि।
 बिरला नाँचे लपट से, रगरी काठ को आगि॥१७६॥
 मनिमहि पर दीपक किया, उड़िके परे पतंग।
 भोजन करे कर्म लगा, कृमि त्यागे कुल संग॥१७७॥
 ऐसो योगी जोग में, साधन करु गुरु ज्ञान।
 जीव बंधन बंधा करे, राधन निसदिन ध्यान॥१७८॥

शास्त्र गीता भगवत, पंडित चतुर सुजान।
 तृष्णा फुली चौगुना, अमृत तेजी विष पान॥१७६॥
 दया राखु दिल धरम कस, नहि आतम को घात।
 सो पंडित खंडित नहिं, चिन्हे शीतल औ तात॥१८०॥
 कीट को गुरु यह भृंग है, मानुष को गुरु ग्यान।
 कीट सो भृंग बनाइया, पद पंकज को ध्यान॥१८१॥
 की कोइ पंडित जानही, की कवि करे बखान।
 की सतगुरु पद प्रेम रस, पारस को परवाना॥१८२॥
 स्वाती को जल जानके, कीन्ह जुगति को भाव।
 पंख तोरि जीव लाइया, एह पारस को दाव॥१८३॥
 मुख सो पारस लाइया, मुख में दिन्ह पिआय।
 सात रोज में भृंग किया, यह गुन प्रकट पाय॥१८४॥
 गुरु हमारे भृंग हैं, मेटा भर्म को भाव।
 कहें दरिया दर्शन सही, भला बना है दांव॥१८५॥
 सतगुरु चरन सुधा सम, विमल मुक्ति का मूल।
 पद पंकज लोचन हिया, अजर अनूपम फूल॥१८६॥
 मरने की अफशोष है, मरते देखा जहान।
 जन्म जन्म की चूक है, हुआ शिकारी स्वान॥१८७॥
 पान फुल सुख वेलसहिं, भक्ति भाव हिए नाहि।
 भइ जन्म की कुकरी, भटकत भवन में जाहिं॥१८८॥
 कायर कुटिल कुमति नर, अति क्रोधी बहु खोट।
 अतना ऐगुन छपत हैं, लक्ष्मी तेरी ओट॥१८९॥
 लक्ष्मी की प्रभुता भला, भला अंत नहिं होए।
 औ पापी उंचा हुआ, बहुरि बिगुरचे ओए॥१९०॥
 धन सम्पत्ति तहाँ विपत्ति हैं, हृदय बड़ा कठोर।
 परत बुन्द पाहन पर, तनिक करत नहिं तोर॥१९१॥
 तैसे सतगुरु सबद है, जड़ को हृदय बेकार।
 शब्द रेत नहिं चित बसे, भरमति बारम्बार॥१९२॥
 संत सेवा करे सिंह बचा, चलत मरोरे अंग।
 जहाँ ठनके तहाँ ठक्का, मन गयंद भयो भंग॥१९३॥

मन गयंद ग्यान आंकुस, उलटी जंजीरे बांधु।
 मस्त हुआ माते फिरे, विरला जग में साधु॥१६४॥
 रोम रोम रस मातिआ, पलक करे नहिं भोर।
 दृष्टि जो लागी गगन में, जैसे चंद चकोर॥१६५॥
 संत सदा गुन सरस हैं, अनरस कवहिं ना होय।
 दुजा दुविधा खोइके, ग्यान सनीपे सोय॥१६६॥
 हरि कनहरिया साधु के, साधु सुमरहिं ताहि।
 राधे रुकुमिनि पति कहि, बड़ी कहानी आहि॥१६७॥
 अजब कहानी जगत में, भगत भेख रचि धाम।
 गावहिं वउरी विमल कहि, घट अंतर में राम॥१६८॥
 काया करम कंह थापिआ, काया करम हैं काल।
 उलटी देखे भव सागरा, कहां विसारेव लाल॥१६९॥
 लाल लगन जब लागिया, ललचेव प्रेम हमार।
 भक्ति शक्ति गुन एक हैं, गहि लीजै तत्व सार॥१७०॥
 ग्यान उदै है उदधि मन, औ दधि मथि प्रेम।
 घृत काढ़ि बाहर किया, बिसरी गया सभ नेम॥१७१॥
 दरिया अगम गम्भीर है, लाल रतन की खानि।
 जो जन मिले जौहरि, लेहिं शब्द पहिचानी॥१७२॥
 दरिया वारे पारे दिसे, दरिया अगम गम्भीर।
 कवि सभथाह ना पावहिं, बुड़े जग बहु वीर॥१७३॥
 आंधर अरसी ना देखे, परसत प्रेम आधार।
 बिनु देखे का ग्यान है, कवि के मुख करतार॥१७४॥
 मन करता कवि में वसे, अगम निगम का भाव
 कहिं अगन कहिं गन परे, चौपरिया की दाव॥१७५॥
 ऐन अंजीर के बाहरे, मीर खड़ा दरबार।
 आम खास जहां तख्त है, बैठ भला गुन सार॥१७६॥
 छत्र फिरे सिर मनि वरे, झलके मोती सेत।
 कहें दरिया दरसन सही, गुरु गयानी का हेत॥१७७॥
 संत सरस गुन अतित हैं, परसत प्रेमहिं ऊंच।
 जैसे दिनमनि दिन में, बसत जगत सभ नीचे॥१७८॥

भान कला छवि छाइया, अम्बुज नैन यह प्रीति।
 सदा प्रेम रस ब्रह्म है, ब्रिगसित वारिज नीति॥२०६॥
 साधु बड़े परमीन है, पलक ना करिए भोर।
 कपट चतुराई चातुरी, यहि हमारे चोर॥२१०॥
 काले या जग पालिया, पल-पल करे नहि भोर।
 मीन मांसु पोखन दियो, घैंची आपनी आरे॥२११॥
 साधुन से परचे नहिं, पीसनी बेसवा दास।
 नीच करम माते फिरे, बीच परा जम फांस॥२१२॥
 यह माया है वेश्या, हम पत साही भांड।
 भांड भांडउरी कर गया, ठाड़े रोवही रांड॥२१३॥
 यह माया है बेसवा, बिसनी मिले तो खूब।
 साधुन से भागी फिरे, कतै परे मजूब॥२१४॥
 यह माया है चुहड़ी, औ चुहड़ी की जोय।
 बीचे झगरा लाइके, आपु किनारे होय॥२१५॥
 माया कारी नागिनी, बसे सो नगर के पास।
 डसेवो सकल संसार के, बांचे धनी के दास॥२१६॥
 धनी मनी न राखहिं, मन करता है सीव।
 शक्ति भक्ति गुण बंदहिं, कहाँ तुम्हारे पीव॥२१७॥
 द्रुम एक फल चारि है, सो फल का गुन पास।
 वा-रंग रहित जगत से, या रंग जरत विनास॥२१८॥
 गलता पवन गलावहिं, पलता है जिमी पास।
 पलता पवन सो पालहिं, एह जनि निजु दास॥२१९॥
 पवन पवन का भेव है, वाही पवन का भाव।
 पछ धरी पवन सोआवहीं, खेले जगत में दाव॥२२०॥
 जहां देखो तहां पवन है, जहां देखो तहां काल।
 जहां देखो तहाँ नीर है, तामे उपजे लाल॥२२१॥
 नीर पवन घन घेरिया, छटा चमके जोति।
 या घट परचे जानिए, पवन बरिसे मोती॥२२२॥
 पपीलक और विहंगम है, भेद परा यह बीच।
 चला विहंगम पवन यह **पुस** लिलक नीच॥२२३॥

पपीलक पवन सो धीर है, धीरे-धीरे जाय।
 कहिं ऊंच कहिं नीच है, धैचि बैठा जीव आय॥२२४॥
 इन्ह दोनों से पार है, पार सो पवन उतंग।
 ज्यों परिमल के लपट में, काटि करम करे भंग॥२२५॥
 पारस पवन मुख ग्यान है, लोचन मनी दुनु पास।
 भक्ति भाव दुनु चरन हैं, इमि करि उग्र आकास॥२२६॥
 अग्र पवन यह अग्र बसे, सागर सलीता नीर।
 जहाँ देखो तहाँ पवन हैं, पारस संग शरीर॥२२७॥
 पतंग फिरे ब्रह्मंड में, अखंड ब्रह्म की बात।
 खंडित कबही ना देखिए, वा दिन मनि को गात॥२२८॥
 दधि सुत के अमृत बसे, राहु ग्रासा किन्ह।
 दिनमनि अग्नि प्रकास है, वागति काहु ना चिन्ह॥२२९॥
 नहिं ग्रहन नहिं ग्रास है, नहिं राहु नहिं केतु।
 यह पंडित कोई जानहिं, अगम निगम का हेतु॥२३०॥
 काल जंजालि पवन है, फिरे ब्रह्मंड आकाश।
 चक्र चहुँ फेरा करे, यहि विधि परिगो त्रास॥२३१॥
 परा परद में चंद यह, मंद हुआ सब गात।
 बहुरि निकल बाहर हुआ, एकर लखे का वात॥२३२॥
 जाको चक्का चलत है, पल में जोजन चारि।
 ताके कवन ग्रासी है, पंडित करो विचारि॥२३३॥
 सहर्ष द्वीप ब्रह्मंड ले, भानु कला प्रकास।
 अंतरद्वीप एक गुप्त राह है, निकलि गया सुनु दास॥२३४॥
 कर्ता भेद को जानहिं, की जाने कोई संत।
 की जानहिं सतगुरु यह, वाकी कहहिं जो अंत॥२३५॥
 ग्राह कहि तो पाप है, नहिं कहि तो भरम।
 या गति में वोय देखिए, अविगति लीला मरम॥२३६॥
 जहां देखि तहां दास है, वा छवि सभ के पास।
 सर्वद्वीप ब्रह्मंड ले, भानुकला प्रकास॥२३७॥
 यह कर्ता जग वरता, वह कर्ता रहा निनार।
 आदि अंत गुन सत है, वाका करो विचार॥२३८॥

आदि भवानी जिन्ह किया, किया निरंजन देव।
 अगम कथा यह जो मथे, सो जाने यह भेव॥२३६॥
 बाहर कहा विवेक करु, घट परिचय कहि दिन्ह।
 बुद्धि जन सुधि वोय जानहिं, मन माया को चिन्ह॥२४०॥
 नवग्रह औ संक्राति, काया ग्रहन फेरि होय।
 सूरचंद गयो मूल में, उलथअ परा है सोय॥२४१॥
 अहो रात अहो दिन में, द्वादश है संक्रान्ति।
 इंगला पिंगल सुखमना, इन्ह की चिन्हिए जाति॥२४२॥
 इंगला चंद वाहनी कहिए, पिंगला भानु प्रकाश।
 सगुन विचार ही साधुजन, अहे पंडित के पास॥२४३॥
 चारि तत्व काया कही, एक तत्व रहे आकास।
 सुरति डोरी रहे मूल में, अहे अमर के पास॥२४४॥
 छित पावक पानी पवन, आदि अंतगुन एक।
 पंच भौतिक यह भवन है, तामे बहुत विवेक॥२४५॥
 अनंत कहि तो अनंत है, एक कहि तो एक।
 जागृत स्वप्न सुषुप्ति, तुरी तेल विवेक॥२४६॥
 पांव पताल शीश नभ हैं, सिकमसिन्धु है अंत।
 पच्चीस प्रकृति पांच तत्व है, तीनि गुन को अंत॥२४७॥
 तामे ग्रहन ग्रास है, परवत ऊंच अरु नीच।
 तंतु विचारे देखिए, आमृत बसे औ मीच॥२४८॥
 अमि कमल आमृत वसे, स्रवन विषी को वास।
 की ज्ञानी कोई जानहिं, की सतगुरु को दास॥२४९॥
 उत्पत्ति परलै पेड़ यह, तामे कर्ता किन्ह।
 अक्षय वृक्ष वोय पुरुष हंही, सो त्रिगुन ते भिन्न॥२५०॥
 तलफत मीन यह जल बिनु, कवल सुखा बिनु वारि।
 परे भवन में भग्ति बिनु, चारों वेद विचारि॥२५१॥
 अक्षय वृक्ष वोय पुरुष हंही, डार पात फूल छांह।
 सहस अट्ठासी मुनि भए, गुरु सिख पकरी वांह॥२५२॥
 आदि भवानी शक्ति है, अनंत कहो तो शिव।
 शिव पीव करि मानहिं, अनंत परा है जीव॥२५३॥

बीज बड़ा को घट बना, बीज से बीज अनेक।
 अपनी अपनी बुद्धि चले, वोए साहब हैं एक॥२५४॥
 ग्यान न जप तप मानहिं, नहिं संज्ञा नहि ध्यान।
 वोय आपुतो भिन्न हैं, भाव भक्ति परवान॥२५५॥
 भक्ति शक्ति गुन एक है, ग्यान पुरुष है सोय।
 भक्ति शक्ति रति खहे, चला जगत सब रोय॥२५६॥
 वरिसे मेध करोड़ जल, धरती नहि अघाय।
 ऐसे शिव शक्ति में, थाकि थाकि सब जाय॥२५७॥
 घर में चूहा नाचहीं, पकरि बिलाइ खाय।
 अव बिल्ली भागी फिरे, गढ़पति पहुंचा आय॥२५८॥
 मधुरा खात माछी भली, माछी मधु के किन्ह।
 माछी मधु के साथ में, लंग परा नहिं चिन्ह॥२५९॥
 बकरी पकड़ा विगह के, विगह गया तब सोय।
 हमरे घर आनन्द है, बहुरी जन्म नहि होय॥२६०॥
 झीन जाल में मीन परु, दिन्ह तुम्हारे ठांव।
 मीन झीन नहिं देखहिं, भला बसावो गांव॥२६१॥
 यहि कसवा कसवी बसे, तसवी फेरे हजूर।
 झीन जाल यह फारिया, जाहिर हुआ हजूर॥२६२॥
 तसवी फेरे कुंज में, पुंज झुमके नूर।
 अलख पलक में देखिये, क्या नियरे क्या दूर॥२६३॥
 मरना-मरना सब कहे, मरि गया बिरला कोय।
 एक बेरि ऐसो ना मुआ, जो बहुरि ना मरना होय॥२६४॥
 जो मेरो दिल कांच है, तो साहब साम्रथ सांच।
 जो मेरो दिल कांच है, तो मनहि नचावत नांच॥२६५॥
 नाचे काछे भेख धरि, जगत रिझावे सोय।
 अव रागी बहु रागीया, छेद हिए में होय॥२६६॥
 विरह वान यह राग है, रस पिरिया को भाव।
 शक्ति नचावत शिव कंह, भली वनिहैं दाव॥२६७॥
 खारो दरिया हद है, बेहद हैं असमान।
 हद बेहद के बीच में, यह कौतुक भगवान॥२६८॥

भव जल तो यह भग कहि, भग में अरुझे जीव ।
 बहुत जतन के पालही, भले हमारे पीव ॥२६६॥
 भक्ति भला है सक्ति संग, ग्यान भला है सूर ।
 भक्ति शक्ति को त्यागिए, बाजत अविगति नूर ॥२७०॥
 भक्ति शक्ति माया भली, साहिब है सामर्थ ।
 कथनी मथनी भक्ति में, वाकी वात अकथ ॥२७१॥
 सुरति निरति नेता हुआ, मटुकी हुआ शरीर ।
 दया दधि विचारिये, निकलत घृत तव थीर ॥२७२॥
 जब तावे परिमल हुआ, काजी जरिगौ नीर ।
 भली घानी घन देखिए, मेटा सकल तन पीर ॥२७३॥
 सतगुरु पद पावन करो, आज्ञाकारी होय ।
 भली भक्ति दासी भली, पिया मिलेगा सोय ॥२७४॥
 मन की झाड़ झलक है, करे पलक मंह चोट
 ऊपर चिकन चातुरी, भीतर भरा है खोट ॥२७५॥
 खोट मोट भेदा करो, कर्म काल कहं झार ।
 अमर लोक के जाइहो, झीन जाल कहं फार ॥२७६॥
 मृत्युलोक में शोक है, संशय सागर लेख ।
 कोटि-कोटि यह लोक है, अविनासी कह देख ॥२७७॥
 तीनि लोक विनसन कहा, एह विनसन किमि बात ।
 आत्म सकल शरीर है, मीन मांसु कहं खात ॥२७८॥
 आपन सुत सब नीक है, परसुत करते घात ।
 बिना दरद मारे परे, यह सुनिए सत बात ॥२७९॥
 मछ कछ वाराह है, हरि निजु धरा शरीर ।
 सो हरि के गुन गावहिं, यह काफिर वे पीर ॥२८०॥
 जल किया तव मीन किया, पंछी द्रुम के वास ।
 यह शोभा संसार का, जल थल किया निवास ॥२८१॥
 गौ किया तब छीर किया, पीवे पीउषन जान ।
 आमृत विष दोनों किया, यह लीजै पहचान ॥२८२॥
 हरनि बहुत अधीन है, चरति वन का त्रेन ।
 ताहि मारे हत्या बड़ा, वोएल परैगा देन ॥२८३॥

गाय के हत्या कहे, महिषी कहे अशुद्ध ।
 एक हाड़ एक चाम है, एक दहि एक दूध ॥२८४॥
 अज्या सुत समेटी के, हटा न मानहिं मूढ़ ।
 पर पीरा नहि जानहिं, भव जल परे अगूढ़ ॥२८५॥
 मीन मांसु जो खात है, सो राक्षस के काम ।
 देवता दैत्य चिन्हे नहिं, क्या लछुमन क्या राम ॥२८६॥
 नानक औ कबीर है, कहहि आपनों पंथ ।
 लाल सगौती खात है, यह सब वात अकथ ॥२८७॥
 नामदेव भगता भला, जानि परा जेहि पीर ।
 आपु बरोबर जानही, आतम सकल शरीर ॥२८८॥
 आतम दरस परस करे, परसत आठो जाम ।
 रमिता रामहिं जानहिं, भला बनो है धाम ॥२८९॥
 नानक और कबीर है, नामदेव की बात ।
 भला बना है सृष्टि में, को परिमल को तात ॥२९०॥
 मुक्ति खोजो जो जुगति है, सतगुरु मत परमीन ।
 कहे दरिया पारख करो, तासो होहु अधीन ॥२९१॥
 औ भक्त सब जगत में, अपनी-अपनी ठांव ।
 सतगुरु पद जब जानहीं, भला बसा है गांव ॥२९२॥
 अंकुर भछे सो मानवा, बीज भछे सो स्वान ।
 अंकुर बीज विचार के, सुमिरहु निरमल ज्ञान ॥२९३॥
 जहां दया तहां धर्म है, जहां लोभ तहां पाप ।
 जहां भक्ति तहां भाव है, जहां झूठ तहां ताप ॥२९४॥
 कबीर पंथ निर्गुन कहे, सगुण कहे सब संत ।
 निर्गुन सगुण सो भिन्न है, सो सतगुरु को मत ॥२९५॥
 महिपति के जानिए, तब गति होए सनाथ ।
 या पति के इन्ह जानहिं, सीता पति के नाथ ॥२९६॥
 गनपति फनपति जानहिं, औ गनपति को ग्यान ।
 काम पतन जव करत है, हरत है बुद्धि बल ग्यान ॥२९७॥
 काम रिपु यह किमि कहि, कंदर्पता रिपु आए ।
 पुहुप वान से मारि के, तुरतहि चला पराए ॥२९८॥

जल थल धरती सघन बन, सायर अगम गम्भीर।
 केते कविता होय गये, हृद दरिया के तीर॥२६६॥
 तहां ग्यान नहिं खोलिए, जहां विगुरचे हाट।
 उलटी आपु विचारिए, चलो समुझि के वाट॥३००॥
 तन मन सगुन रतन करु, चुभुकि दीजे तेहि ताल।
 ग्राहक आगे खोलिए, कुंजी वचन रिसाल॥३०१॥
 बहुत पसारी हाट में, घट-घट सौदा पास।
 लेना होय सो लिजिए, परख णनी का दास॥३०२॥
 जो परखे सो पारखी, ग्यान रतन की साट।
 बिनु पारस का बोझ है, चला उठाए खाट॥३०३॥
 अवघट तरनी लागिया, पतवारी गई टूट।
 कन्हरिया आंधर हुआ, सो जीव यम ने लूट॥३०४॥
 कन्हरिया सतगुरु कहि, सुकृत जाको नांव।
 शील संतोष तरनी भइ, गये अमरपुर गांव॥३०५॥
 इत आवहि उत जात है, परे त्रिगुन के धार।
 बिनु गुन ग्यान के नाव है, सहे यम की जार॥३०६॥
 कहे हमारे गुरु है, सो गुरु व्याघ्र की जात।
 मासुं बिना जिवे नहिं, मारि करे उत्पात॥३०७॥
 वामी में विषधर बसे, अहे गरुर को मंत।
 मंजे धुरी चटावहि, भला तुम्हारो कंत॥३०८॥
 पिया काम तब पाइया, सोइ सोहगिनि सांच।
 कंत का मत नहिं आइया, लागा भरम का आंच॥३०९॥
 पिया बिनु कहे सुहागिनि, अहे रांड की जाति।
 जग में करे पिसावनि, उद्दम परा दिन राति॥३१०॥
 साधु जन मांगे नहिं, मांग खाय सो भांड।
 सती पिसावनि ना करे, पिसि खाय सो रांड॥३११॥
 सुनहु संत सुजान, अमी प्रेम शीतल पियो।
 तजि काम क्रोध को वाम, जलद झलके नूर यह॥३१२॥
 यह चरखा चौमुख बना, सुत कर्म है तार।
 यह रहटा के फेरिए, आवत जात न वार॥३१३॥

सुहागिनि सुत काटिया, बनि तुम्हारी भांति ।
 मकर तेजि फकर हुआ, सोइ साधु की जाति ॥३१४॥
 जाति जाति सभ जाति कहि, अजाति जाति सो भिन्न ।
 नहिं ब्राह्मण राजपूत है, वैश्य शूद्र का चिन्ह ॥३१५॥
 साधु हमारे निकट हहीं, विकट कबहिं नहिं जाय ।
 भाव से भोजन डारही, डरत रहे लव लाय ॥३१६॥
 ज्यों कमल जल में बसे, जल से नहिं बृगसान ।
 भान कला प्रकट करें, तब दृग देखे ध्यान ॥३१७॥
 त्यों नर सर में कमल है, जल जावन है पास ।
 सतगुरु परसे प्रेम से, भया चरन को दास ॥३१८॥
 बिना प्रेम नहिं पथ है, पंथ है प्रेम के पास ।
 बिनु सतगुरु नहिं दरस है, का कहि कथे उदास ॥३१९॥
 उदासी तो तबहि लहे, जब ग्यान होखे प्रकाश ।
 बिना प्रेम का मानवा, पेट बेगारि पास ॥३२०॥
 मरकट भूषण ना चिन्हें काह भूषण को भाव ।
 जो अमर सिर पर देवे, तो चौथी के करे दाव ॥३२१॥
 कीस करम यह नीच है, चतुर बड़ा है चोर ।
 साधु संगति सुधरा नहीं, हृदय बड़ा कठोर ॥३२२॥
 जो पथरी जल में बसे, चकमक तजे न आगि ।
 जो सतगुरु आमृत सिचें, तो रहा क्रोध सभ लागि ॥३२३॥
 संत समुझि आमृत पीवे, शीतल प्रेम भरिपूर ।
 काम क्रोध मद लोभ ते, जो जल झलके नूर ॥३२४॥
 ऊंच नीच औ नरम चाहे, बरिसे सुधा समेत ।
 आमृत पीवे अमर होखे, विषि पीवे मरि भौ प्रेत ॥३२५॥
 गर्भपात गर्भे होखे, जिवे तो काल सरूप ।
 जब मुवे तब प्रेत है, अनवा बहुत अनूप ॥३२६॥
 मुख नहिं स्रवन ना नेत्र है, जल पीवे केहि भांति ।
 सूंघत फिरे कुबास में, यहि तुम्हारी पाति ॥३२७॥
 मानुष सुन्दर सजल है, जैसे कमल का फूल ।
 भक्ति करे गति चिन्ह के, बड़ो तुम्हारे कुल ॥३२८॥

मन औटे तो राज है, मन चिन्हे तो संत।
 मन है जीव के साथ में, विसरी गया निजु मंत॥३२६॥
 भोग किये तो रोग है, राज किये तो नर्क।
 तीनि सौ साठि सिर पाप है, कहां तुम्हारो तर्क॥३३०॥
 राम कहे रमिता भया, सलिता सागर संग।
 सागर सलितहि ना मिले, वाको बड़ा तरंग॥३३१॥
 नरे नारायण नारि हुआ, नरे भक्ति भगवान।
 जीव शिव दृष्टान्त है, पुरुष इन्हते आन॥३३२॥
 कंदप कला ना कामरति, मरे जीवे नहि होय।
 चेतन ब्रह्म अचिंत है, पर चिन्ता कहां खोय॥३३३॥
 कवि के मुख बैकुंठ है, मढ़ी नियरे की दूर।
 जहां रमिता तहां राम है, तन छूटे भव धूर॥३३४॥
 दया धरम यह दोइत है, जीव पाले धन देत।
 मीन मांस यह त्यागि के, पुरी कमाई लेत॥३३५॥
 एक जीव के वधते, महा पाप प्रवेश।
 त्रियदेवा वध होते है, ब्रह्मा विष्णु महेश॥३३६॥
 सीपट काग विकट परा, धरा जंगल का देह।
 मीन मांसु जो खात है, बड़ी कल्पना ऐह॥३३७॥
 वीप्र भये विद्या पढ़े, वेद कहे नहिं घात।
 सांच कहे कांची बोले, नाचत जम के तात॥३३८॥
 सतगुरु सरन साधु मता, अंत भला सभ होय।
 प्रेम सुधा अमृत पिवे, जीवे जगत में सोय॥३३९॥
 मानुष गुनगामि भला, मांसु न आवे काज।
 अभरन हाड़ न होत है, त्वचा न वाजन वाज॥३४०॥
 पसुका होत है पनही, नरक कछु नाहि होय।
 जो नर भजे नरायन, आपु नरायन होय॥३४१॥
 वालमीकि मुख राम भनी, चरत्रि कहा सभ जानि।
 कवि तुलसी कलि में भये, कथा बखानहिं आनी॥३४२॥
 सधुकुल कुल जगत मनि, सो तुलसी पद प्रेम।
 राम चरित्र गुन गावहि, तेजि सकल भ्रम नेम॥३४३॥

निर्गुण सगुण दोऊ भाग करि, उभय बीच के जीव ।
 जीव शिव करता नहिं, विनस गया यह पीव ॥३४४॥
 प्रेम पिवे तो नेम नहिं, नेम लिए दुरि जाय ।
 जब चिन्हें कुल आपन, भक्ति किये पछताय ॥३४५॥
 निर्गुण सगुण सभ जानहिं, योगी मुनिवर संत ।
 प्रतिमा देख भौ बावरा, फिटक शिला गजदंत ॥३४६॥
 अगुन कहे सगुन कहे, कहे निरंजन देव ।
 निर्गुण सगुण ते भिन्न हैं, ता कर्ता कहं सेव ॥३४७॥
 निर्गुण सगुण सभ जानिके, करहिं भजन संत ।
 निर्गुण सगुण के आगरे, तहां वसत वोय कंत ॥३४८॥
 जोगी तो जाने नहिं, पंडित पढ़ी के मंद ।
 ग्यानी तो कथनी कथे, कवि करते बहु छंद ॥३४९॥
 रवि को छवि यह छीत पर, सो निर्गुन को भाव ।
 छवि से रवि नहि होत है, निर्गुन को परभाव ॥३५०॥
 राम रामायन दोय भले, कथा सो तुलसी दास ।
 मीन मांस कह खात है, करहिं अर्थ प्रगास ॥३५१॥
 अर्थ कहे निअर्थ भवो, ढाढी और चमार ।
 मीन मांस कह खात है, करहिं अर्थ प्रगास ॥३५१॥
 अर्थ कहे निअर्थ भवो, ढाढी और चमार ।
 मीन मांस कह खात है, कहों कवन गुन सार ॥३५२॥
 अजर विंद छवि छीत पर, कोटी कला प्रकास ।
 जरा मरनते रहित हैं, कहे दरिया सुनु दास ॥३५३॥
 राम माया में आइआ, राम माया को अंग ।
 कहे कवि कर्ता ताहि को, पुरुष कबहि नहिं भंग ॥३५४॥
 राम चरित्र चित में बसे, चरित्र परा नहिं जान ।
 सीया चरित्र कहं जानिए, पारखि जन की मान ॥३५५॥
 रावन मारि लंका लिया, दिया विभिषण राज ।
 महावीर यह धीर है, सुकल हमारो काज ॥३५६॥
 विभिषण के सभ भगत कही, वेद चतुर गुन गाय ।
 सगरो कुल के नासी के, बड़े बड़पन आय ॥३५७॥
 कहे सीया श्रीराम से, भला तुम्हारा साधु ।
 माया वेरि साजी के, अपने आपु कंह बाधु ॥३५८॥

भले विभीषण भला राम तुम, भला कियो है काम।
 पाप बड़ो सिर बोझ है, बसे नरकपुर धाम॥३५६॥
 पाप कहिं की पुण्य है, दया कहिं की भक्ति।
 ज्यों हिजरे की जाति है, शिव कहिं की शक्ति॥३६०॥
 या तन तो लंका भयो, मन भव रावण आये।
 संशय तो हलीवंत है, देत जराए राज॥३६१॥
 जो मन रावन में बसे, सो मन राम के पास।
 चीता बाघ किन्ह मारिया, सुनो वचन निजु दास॥३६२॥
 सीय चरित्र चित में बसे, अब कुछ करो प्रकास।
 अति मन गर्व हंकार है, इन्हकर पुरवो आस॥३६३॥
 जो माया त्रिय देव कहं, बहुत नचावे नाच।
 सो माया हैं राम गृहि, चिन्ह परे तो साच॥३६४॥
 बोली या अति प्रीति करि, मम दासी तुम कंत।
 सहस बदन एक वीर है, बसे सिन्धु का अंत॥३६५॥
 शहर मदनपुर मद बड़ा, अति छवि सुन्दर पाय।
 इन्द्रलोक से शहर है, यह गुन देखिए जाए॥३६६॥
 आपु अकेला बल बोले, कटक नहिं वोहि साथ।
 ऐसन वीर कंह देखिए, मानत नहिं तुम त्रास॥३६७॥
 राम लखन जब सुनिया, क्रोध जो भया शरीर।
 उलटी राम क्षमा किया, लखन बड़ा तुम वीर॥३६८॥
 यह चरित्र माया की, परखि सके नहिं अंग।
 महा-महा यह वीर भट, करहिं कटक सभ भंग॥३६९॥
 अब तो वाकहं देखिए, इहां छोड़ावो बंद।
 जो फिरो तो लाज हैं, गबने काम अनन्द॥३७०॥
 भुजा फरके सुरका, धुरि मिलावो गात।
 सहस बदन सिर काटिहो, बोले लखन निजु बात॥३७१॥
 कटक सभे भट वीर सभ, अटक राखा नहिं खेत।
 लघु दृघ देखि भागिया, गए मदनपुर हेत॥३७२॥
 देखि अचम्भे अचरज हुआ, श्रृंग चढ़े सब लोग।
 सैन समूह सागर जहां, यह वे प्रीति है जोग॥३७३॥

लंकापति जिन्हि पतन कियो, सीतापति गति नाथ।
बीस भुजा दस शीश पिस के, दैतन्ह कियो अनाथ॥३७४॥
कहा वचन नृप से सभ, दसरथ तनय है राम।
लंका गर्द मिलाइया, जहां छोड़ायो वाम॥३७५॥
आइ कटक निकट सभै, ठेलि विकट वना एत।
सुर सभ भूमि बुहारहिं, अब चढ़िए निजु खेत॥३७६॥
सहस्र बदन वृगसे नैन, हँसी बोलेवो जो वैन।
माया चरित्र चातुरी बड़ी, कवन करे सुख चैन॥३७७॥
त्रिया जगत में हरेवो नहिं, सुर मुनि कियो ना बंद।
वे गुनाह कारन कवन, आवत है मति मंद॥३७८॥
हम गती मती सभ जानही, ममता माया विरोध।
शिव विरंचि जिन्ह बस किए, सुर नर कियो हैं बांध॥३७९॥
राम बाप के संग में, रंग झीना है जाल।
धैचि फिरे कौतुक करे, चिन्ह परे नहि काल॥३८०॥
जीते सभे अजित सभ, कटक फेके उखार।
सीता चरित्र नहि जिती हो, मम सिर कटिहें झार॥३८१॥
ऐसन साहस शक्ति किए, वीर भूमि जहां खेत।
सहस्र बदन वृगसित नैन, वान लिए कर ऐत॥३८२॥
पवन पारथि वान है, छुटा पवन अनेक।
विचले वीर सभ खेत से, राहा काहु नहिं एक॥३८३॥
छुटा सरासन वान एक, निजु घर पहुंचे जाये।
राम लखन रहे खेत पर, बहुरी भिड़े फेरि आये॥३८४॥
डारसी मोह समूह सभ, औ घन घटा समेत।
जैसे सेंधु अथाह में, मानो बुड़े अचेत॥३८५॥
धाये सूर बेवान चढ़ी, कौतुक माया अनंत।
पति हारे गति जाति हो, यहि तुम्हारे कंत॥३८६॥
तब जागि प्रचंड होय, धरे अखंडित रूप।
कर कृपाण यह झारिया, सुर सभ देखे अनूप॥३८७॥
सहस्र बदन सिर काटि के, कोमल धरा शरीर।
सुर सभ अस्तुति भाखहिं, धन माता मति धीर॥३८८॥

ते प्रचंडी डंडेवो जगत कंह, घंडेवो सीस सभ जान।
 राम लखन जिमि जागिया, सोवत भया विहान॥३८६॥
 नहिं सैन समूह संग, रवि भौ दिन मलीन।
 आदि जोति जग विदित है, इन्ह कौतुक सभ किन्ह॥३८७॥
 नहिं वीर कोई संग में, अनुज परें हम खेत।
 कैसे सिर धर काटिया, कहो वचन निज हेत॥३८८॥
 मैं दासी तुम पास हो, परसी चरन पद प्रेम।
 जैसे भंवर कमल पर, एहि हमारो नेम॥३८९॥
 तुम रघुवर कुल वंश हो, मैं दासी तुम साथ।
 सदा जुगल जग विदित हो, भय भंजन रघुनाथ॥३९०॥
 तुम चरित्र देखे बिना, मम मन होत न बोध।
 ते कोमल कुमुदिनी कली, मम तन होत हैं क्रोध॥३९१॥
 काढ़ि खरग ब्रह्माण्ड ले, छटा चमकि घन घोर।
 लटकि रहे वीर कोटिले, सर्व सरग भवो शोर॥३९२॥
 देखा राम रूप सभ, अगम अथाह बेअंत।
 कर जोड़े ठाढ़े भये, अनुज समेत तुरंत॥३९३॥
 छकित भयो छेमा करो, छल बलते कियो घात।
 यह गुन वेद ना गावहिं, सहस बदन निपात॥३९४॥
 माया चरित्र चतुरानन, सो नहिं पायेवो अंत।
 चारो वेद थकित भये, सुनहु हमारो कंत॥३९५॥
 माया जगत में जोर है, जल थल धरती आकाश।
 विरला जन कोई जानहीं, कहें दरिया सुनु दास॥३९६॥
 सतगुरु ग्यान गमि करु, मुक्ति पदारथ होय।
 पुरुष छोड़ि नारि गुन गावहिं, चला जगत सभरोय॥४००॥
 आदि भवानी अंत है, जग जननी सभ ठांव।
 सतगुरु शब्द विचारके, बसहु अमरपुर गांव॥४०१॥
 अमरपुर अमृत पिवे, अजर सोहावन अंग।
 जरा मरन ते रहित है, कबहिं ना होखे भंग॥४०२॥
 या घट पट जब खोलिए, कला संपूर्ण सार।
 या देखे वोय देखिये, तव गति होय ततुसार॥४०३॥

ललित भक्ति नयनीत हैं, सलिता अमि सरोज।
 नाम वेवान विमल बना, गुरु पद पंकज रोज॥४०४॥
 गंगा जमुना सरस्वती, सलिता मिलेऊ सोत।
 पियत प्रेम पल ना परे, वा पति गति के वोत॥४०५॥
 वरिसत सुमन सुगंध अति, चात्रिक ऐसी प्रीति।
 अनल समान सरिता में, एहि सज्जन की रीति॥४०६॥
 काटि कपट पट प्रेम है, सभ घट त्रिया अनूप।
 वा चित में चित चुभिया, दरसन चंद सरूप॥४०७॥
 उदय होत वृगसे कली, एक रजनी एक दिन।
 बिलगि बिहरी फेरी मिलही, रवि चंदा दूरवीन॥४०८॥
 चली सोहागिनि पंथ में, रथ पवन के साथ।
 अमर चीर चिखुर मोती, भूषण सभे गुन गाथ ॥४०९॥
 जहां तख्त आम खास है, खुशी महल अनूप।
 सदा आनन्द ही मद है, देखि झलाझलि रूप॥४१०॥
 बिछुरन कबहि न बिच है, नीच करम नहिं काल।
 मंगल सदा आनन्द गुन, मनी झलके तहां भाल॥४११॥
 प्यासी फिरे सो पिए रस, बसी माया के साथ।
 धूँघट पट के खोलिए, जहां तुम्हारे नाथ॥४१२॥
 कवि आखर सो भेद है, चिन्ह परे नहिं कंत।
 सतगुरु मत पद पंकज, नैन, लोभावहिं भांति॥४१३॥
 फूली कला कमोदकी, सभ कुल कर्म नसाए।
 चंद मंद नहिं देखहिं, अमृत देखत पिआए॥४१४॥
 भव भर्म सभै बिसारिके, कर सतगुरु से प्रीति।
 शील सर्वदा प्रेम रस, यह साधुन की रीति॥४१५॥
 शीलसर्वदा साधु मत, गुन ग्यानी सोई संत।
 औगुन सभै विहाइके, विमल भया निजु मंत॥४१६॥
 विमल में मल ना रहे, दधि नहि घृत समाए।
 जब कुल तजि बाहर हुआ, फेरि नहिं कुल में जाए॥४१७॥

जैसे तिल में फूल है, बास जो रहा समाय।
 धैचि वासना तिल में, बहुरि उलटी नहि जाय॥४१६॥
 तिल को तेल फुलेल भवो, मेटा तिल को नांव।
 सतगुरु शब्द संजीवन, चिन्ह परा निजु ठांव॥४२०॥
 तिल पेर यह तेल है, बिनु पारस को जीव।
 बिना पुहप नाहि वासना, बिलगि परा जीव शीव॥४२१॥
 बिनु पारस फेरे नहीं, वृगसे नहीं मुख प्रेम।
 कपट चतुराई चातुरी, खोजत है भर्म नेम॥४२२॥
 पूजा पाहन षट् कर्म है, भटकत तीरथ अनेक।
 पानी पाषाण पर्वत घने, यही तुम्हारी टेक॥४२३॥
 यह देवल में दरस है, परसत प्रेम ही घात।
 मूरति महल अनूप है, तेजु औगुन की बात॥४२४॥
 सिख घनेरे गुरु केते, पुरी परे सो दाव।
 चौपरिया का खेल में, जुगल परे तब आव॥४२५॥
 सलीता में चलीता भली, तरनी वाको नाव।
 सलीता में मलीता नहीं, गये अमरपुर गांव॥४२६॥
 मलीता मइल सो मद माया, जगत पीवे सभ जान।
 जैसे मृग मद मातिया, भया जीव के हान॥४२७॥
 अमर कोस मृग मद चहे, उलटी गया तेही पास।
 धुआं वहां ले जात है, नहिं माने पवन की त्रास॥४२८॥
 कामना त्यागे रति करे, रति नहिं त्यागे काम।
 जल के मीन ना त्यागहिं, बना परस्पर धाम॥४२९॥
 जल के मीन जब त्यागहि, प्राण गवन तब किन्ह।
 रति के काम जब त्यागहि, भए जगत से भिन्न॥४३०॥
 त्यागना त्यागना सभ कहे, त्यागत भौ युग चार।
 पढ़े वेद पंडित भये, गये जगत में हार॥४३१॥
 मद चिन्हे ममिता तजे, शक्ति रंग होय फीक।
 औबग बहुत हैं चातुरे, काग कर्म नहीं पीक॥४३२॥
 कर्म काटी कहता फिरे, लरते साधु के बीच।
 अवघट में मरि जाहुगे, या घट डारेव नीच॥४३३॥

अमि सरोवर त्यागि के, विष सरोवर वास।
 साधु संगति सभ त्यागि के, कियो मुक्ति का नास॥४३४॥
 कहे दरिया दर ना देखे, कवि करते बहु छंद।
 मुकुर मंद देखे नहिं, परदे परा सो चंद॥४३५॥
 मुनि कहे माधो भले, मधुकर मालती संग।
 विविध फुल माते फिरे, मुख मुरली है रंग॥४३६॥
 भक्ति भली है कर्म तेजु, कर्म करहु जनि जान।
 अकरम करम विचारि के, जल पीवे यह छान॥४३७॥
 जो मति होय मराल की, मर्म जाने गुरु ग्यान।
 नीर छीर विवरन करे, भौ जगत में मान॥४३८॥
 यह मत नाहिं मानहिं, जो जगत खुशी सभ होय।
 खुशी खास जुबान है, कर्म काल कहं खोय॥४३९॥
 सतगुरु से करु प्रेम यह तजो भर्म बेकार।
 शीतल सर्वदा प्रेम रस, समुझि लीजै ततुसार॥४४०॥
 गोराहा गहिरे बुड़िया, शीला वोहित उत्तंग।
 पापी अमरा सेज पर, धर्मात्मा देखा लंग॥४४१॥
 अंधरे आरसी अंक देखु, डीठे सुझे ना रूप।
 गूंगा ग्यान प्रकाशिया, वहीरा सुने चुप॥४४२॥
 ग्यान खर्ग जवही गहो, छपीत भए रिपु राज।
 सुत अदल हम भाखिया, मुक्ति महातम काज॥४४३॥
 सर्प है आमृत उपजे, मेटा विष के खान।
 सतगुरु कहा विचारि के, संत कोउ पहचान॥४४४॥
 दादुल दल चढ़ खेत पर, गरुर गर्व भौ भंग।
 यह दोनों के बीच में, काको करिए संग॥४४५॥
 दादुल के डर कुछ नहि, जोरी पुंज सभ हारि।
 कोटि गरुर सभ गलि मुए, दादुल गहो विचार॥४४६॥
 हिन्दु तुर्क दुई पक्ष है, पक्ष न सुमिरहि संत।
 निरपक्ष होय पक्ष एक है, इमि सतगुरु का मंत॥४४७॥
 कलमा कहे गायत्री, वो कहें राम रहीम।
 बेसारा सारा कहें, वे सो कहें करीम॥४४८॥

बेसारा सारा कहें, नहिं सारा की सिप्ती।
 शराब पिवें सारा कहें, भलि बनि है भिस्ती॥४४६॥
 शरीकत तरीकत मारफत, कहे हकीकत जानि।
 दर्द राखे दुर वेश है, करे बिहिशित पहिचानी॥४५०॥
 हाजी हज के जानिए, हाजी हज के पार।
 काबिले मुख साची कहें, मका मदीना सार॥४५१॥
 कुर्बानी फुरमावहि, कुर्बानी है जीव।
 एसो पीर मुरीद है, कहां तुम्हारे पीव॥४५२॥
 दर्द बिना दुर्वेश है, बेदरदी बे पीर।
 सीजरा लिखहिं सिप्ती से, खुशी करहिं अमीर॥४५३॥
 त्रीय मंगल त्रीय ग्यान है, चौथा इनते भिन्न।
 त्रीगुन तीनि ताप है, कहे कहानी दिन॥४५४॥
 बहुत बनौरी वन भरा, जाल जुलुम है पास।
 मुनि सभ मन नहिं चिन्हही, करै त्रिगुन की आस॥४५५॥
 दोइत अदोइत विराग मत, परमानन्द निजु पास।
 निरंकार निर्गुन कथा, सनकादिक भए उदास॥४५६॥
 अछै वृक्ष ओय अगम है, इहां पावरी पसरी अनन्त।
 सझुराए सुझरे नहिं, खाजे सोहागिनि कंत॥४५७॥
 इन्द्री ग्यान है जगत में, भक्ति इन्हते भिन्न।
 जागत सोवत काम रत, सोई बड़े प्रवीन॥४५८॥
 ब्रह्म ग्यान सभ ब्रह्म है, कहे भेख भगवान।
 मीन मासु मदिरा पिवें, शिव शक्ति को ध्यान॥४५९॥
 करे खंडित तेहि डंडे कालने, पंडित के गुन चेत।
 बिना दया बिनु भक्ति बिनु, मरि-मरि होत प्रेत॥४६०॥
 अनुभव भयते रहित है, भव भर्म त्यागे जान।
 भय नासे पद पायके, पद पंकज को ध्यान॥४६१॥
 उग्र ज्ञान यह अग्र है, भव सागर के पार।
 जत तप नहिं ध्यान है, समुझि परि तत्व सार॥४६२॥
 मुद्रा चारि चौ ग्यान है, उनमुनि करु प्रकाश।
 एक पपीलक पवन है, वृक्ष विहंगम वास॥४६३॥

बंदहिं काल सतगुरु निन्दा, भालु भया अवतार।
 भरमहिं कलप कोटि ले, चौरासी के धार॥४६४॥
 सतगुरु महिमा युग-युग, जागृत जीव के पास।
 दर्शन से पर्सन हुआ, किया कर्म का नास॥४६५॥
 भक्ति बिना यह कीश है, विसम्भर के गांव।
 नट नचावे बाँधि के, परे अंध कुठांव॥४६६॥
 जीव बधन राधन करे, साधन भैरो भूत।
 जन्म तुम्हारा मृथा है, श्वान सूकर का पूत॥४६७॥
 काया वृक्ष पल्लो पंखुरी, तामे फल है चारि।
 किछु खर्चे किछु खाइए, गुरु मुख वचन विचारि॥४६८॥
 सखा सघन घन पत्र है, नैना पंछी वास।
 फल खाये जल अचवें, शतल शब्द नेवास॥४६९॥
 दुखे सुखे दिन काटिये, धुपे रहिए सोय।
 ता ते आसन कीजिए, जहां पेड़ पातरो होय॥४७०॥
 जो दरिया के विषि बोए, ताके बोइए फूल।
 विष में विष जाय लागिहें, अंत संजीवन मूल॥४७१॥
 दरिया दिल दरियाव है, खाली कबहिं ना होय।
 भादो नदि सबै बढ़ियावें, अंत रहेगा वीय॥४७२॥
 हंस बग दोनों उड़हिं, मानसरोवर जाहिं।
 वीय धरि लावहिं बेगुंची, हंस मुक्ता हल खाही॥४७३॥
 हम जानो कुल हंस है, ताते लाया संग।
 अब चिन्हा वग वापुरे, छुए ना दिन्हो अंग॥४७४॥
 सजल जल निरलेप है, विमल सदा सुख संत।
 दुई पर्वत के बिच में, मिला सोहागिनि कंत॥४७५॥
 जाति अजाति सुजाति है, भक्ति भला गुन सेत।
 बिना भक्ति नहिं वांचिहो, मरि-मरि होइहो प्रेत॥४७६॥
 जाति-पांति नहिं पुछिए, पुछहु निरमल ग्यान।
 संत की जाति अजाति है जिन्ह पायो पद निर्वान॥४७७॥
 जाति पाति कुल कपड़ा, एह तो है दिन चार।
 ज्यों आवे त्यों जायेगा, हाथ जुआरि झार॥४७८॥

पगु बिनु चले जगत में, वाका बात अनंत।
 पंछी खोजु मीन कर मारग, कवन बतावे अंत॥४७६॥
 मन अझुरे सझुरे नहिं, रचि रचि कातिवो सुत।
 चारि वेद कथनि किया, सुनहु पंडित के पुत॥४८०॥
 मन निन्दहिं मन वंद हो, मन के कर्ते किन्ह।
 कवि कौतुक कारन करे, जम के हाथ अधीन॥४८१॥
 हृदय दया ना अंकुरे, बोवे ना बीज सुखेत।
 गंगा जमुना सरस्वती, एहि बिच परा है रेत॥४८२॥
 कहे दरिया दया करो, दर्शन साधु अनूप।
 रज में राज मिलाइहे, नहिं रहेगा रूप॥४८३॥
 पापी पलक मूंदे फिरे, साधु न जानि हीत।
 कहें दरिया दर्शन बिना, खड़ी भरम की भीत॥४८४॥
 सुरी कंटा में पगु परे, कटक लिए जम साथ।
 मुसुक चढ़ाया चोर है, सतगुरु बिना अनाथ॥४८५॥
 कागज परा हजूर में, बेबाहा के हाथ।
 कहां भागि जीव जाइहो, लगा पियादा साथ॥४८६॥
 तपत शिला पर डारिया, डरतेही परा चिक्कार।
 गुनहगार के सिर पर, दिजै कोरा की भार॥४८७॥
 कागा कपुता काछीया, धरे हंस का भेस।
 विवरन नहिं नीर छीर का, जम धरि पकरि केस॥४८८॥
 मति मराल गति संत है, छेक सके नहिं कोय।
 भवसागर जीत जाइहो, यह मृथा नहिं होय॥४८९॥
 रामहिं रावन जुद्धि भवो, कहि कवि कथा बनाए।
 राम चरित्र गुन गावहिं, जग कंह बहुत सोहाय॥४९०॥
 यहां राम वहा रावन, वाजी रचा ऊपाय।
 यह दुनो के मध्य में, कवन रहा अरुझाय॥४९१॥
 दुइ पर्वत के मध्य में, मन जो रहा समाय।
 चिन्हे बिना कर्ता कहे, वेद चतुर गुन गाय॥४९२॥
 आटि ज्योति यह वादि है, गति मति सभ की लेत।
 आगे राह बताइके, पिछे गोता देत॥४९३॥

जाके रूप रेखा नहिं, सपत पताले जाय।
 कारी नागिनि नाथ के, कौतुक देहिं देखाय॥४६४॥
 नहिं नाग नहिं नाथिया, आप ही दोइत होय।
 अपनहिं नाग आप सिर चढ़ी, बुझे बिरला कोय॥४६५॥
 इन्द्रजाली का जाल है, जल में माड़ो छाय।
 चारि खम्भ कलसा धरा, मोती झालर छाय॥४६६॥
 नहि माड़ो नहि खम्भ है, नहि मोती छवि छाय।
 सुखे ठाट ठगा करे, सभ की मति फिर जाय॥४६७॥
 आपु नाचे नहिं सभे नचावे, यह गुन कहा बुझाय।
 जैसे बलि वावन का कौतुक, घटे बढ़े नहिं जाय॥४६८॥
 जैसे कागा भर्म में, भागी कहिं ना जाय।
 चक्र फिरे ठाएं रहा, सभ मति गइ भुलाय॥४६९॥
 कोटि कोटि ब्रह्माण्ड में, कल्प केता बित जाए।
 उभय धरिका बिच में, कौतुक कला देखाय॥४७०॥
 कवि सभ कथा बखानहिं, बुद्धि का परकाश।
 सांचहिं झूछहिं बिच है, मन चिन्हे कोई दास॥४७१॥
 जैसे मति गति जानहिं, फेरि मति गई भुलाय।
 साटी ले सुटकावहिं, खसे जमी छरी आय॥४७२॥
 फेरि उठि के गोहने लगा, सुन्दर बहुत सोहाय।
 अनंत रूप छवि छाइके, गोपीन्ह के संग जाय॥४७३॥
 मुरली मनोहर मुखलिए, सुख राधे के पास।
 जहां पलंग पवड़ा करे, वृन्दावन में वास॥४७४॥
 नंद घर ग्वालिन खड़ी, बड़ा चतुर है चोर।
 ग्वालिन से झगरा करे, सारी फारु मरोर॥४७५॥
 वरजु यशोमति सुत कह, अजगुत करे मुरारी।
 ऊहां बालक ऊहां तरुन है, बोलत बैन बेकारी॥४७६॥
 क्या ग्वालिन परिपंच करु, बालक पवड़े खाट।
 हम खेलावन गोद में, कब रोकन्ह तुम्ह वाट॥४७७॥
 मन के चरत्रि चिन्हे नहि, वेद ना पावहिं पार।
 सुर नर मुनि अरुझा करे, कर्ता इन्ह ते पार॥४७८॥

नहिं गोपी नहिं ग्वाल है, नहिं सीव शक्ति को संग।
 नहिं कंस पछारिया, नहिं अनंत काको रंग॥५०६॥
 नहिं सीता तेहिं पति कहि, नहिं किया लंकशर भंग।
 नहिं बावन बली जांचिया, एह मन माया को रंग॥५१०॥
 कृष्ण गीता की मति कहा, सलिता भली की शीत।
 कवि आखर बंधा करे, खड़ी भर्म की भीत॥५११॥
 गीता को हीता करे, तो मीत तुम्हारे पास।
 दया समेत दरसत रहे, सोइ कृष्ण को दास॥५१२॥
 प्यास जाय नहिं आस पुजे, कवि कर्ता की बात।
 रस बीरी यार करे, आमृत तेजि विष खात॥५१३॥
 सत की साची कहे, मचे सो प्रेम निरंत।
 जैसे सोहागिनि पिया कंह, गले लगावे कंत॥५१४॥
 जल कुकुही जल में बसे, बुड़े गिरे उतराय।
 पानी पर लागे नहि, बड़ा अचम्भो आय॥५१५॥
 तैसे मन निर्लेप है, रहे अछुत अर्चीत।
 भोग सकल संसार में, पाप पुन्य करै नीत॥५१६॥
 वास कुवास सुवास में, सभ पर करे नेवास।
 आदि एक फिर अनंत है, रहे जीव के पास॥५१७॥
 मन मकरंद माथे बसे, त्रिकुटी संगम तीर।
 पल-पल छन'छन बुद्धि रचो, काम क्रोध का वीर॥५१८॥
 दुई भ्राता है भवन में, लघु दृग सभ के पास।
 कंद्रप लघु दृग क्रोध है, सुनो वचन निसु दास॥५१९॥
 क्रोध वीर रन में भीरे, मुख पर तीर बिराजु।
 तब कंद्रप कंदला गए, छपित भये यह आजु॥५२०॥
 मानहि त्रास क्रोध के, कामिनी भाऊ ना भोग।
 जैसे जोगी जोग में, ज्ञानहिं जुगुती संयोग॥५२१॥
 क्रोध शीतल तब मांस मेटा, तलफा मेटा शरीर।
 तब कंद्रप प्रगट भये, कामिनि मुख पर मीर॥५२२॥
 रति औ काम जुगुल भए प्रिय प्रेम सोहाय।
 जैसे चमेली चातुरी, भृंगहिं जीव लोभाय॥५२३॥

लोभेवो भर्म देखि फूल, निरलोभी कोई साधु है।
 शिव शक्ति समतूल, अति भव भर्म विकार है॥५२४॥
 कवन पवन धरती बसे, कवन पवन आकाश।
 कवन पवन पाताल है, कवन पवन घट वास॥५२५॥
 रज पवन धरती बसे, उदया जीत अकाश।
 शरद पवन पाताल है, सूर पवन घट वास ॥५२६॥
 रज पवन धरती कही, विजया रज के पास।
 दुवो जुगल एक संग है, जन्मे अंकुर सुवास॥५२७॥
 रूद्रानी मुख में बसे, कवि कथा रचि लिन्ह।
 प्रबंद छंद पिंगल पढ़ी, शक्ति भरोसा किन्ह॥५२८॥
 साधु शक्ति से बीच है, ज्यो चित्र रचि दिन्ह।
 त्यागहिं स्वाद साधन करे, सोह बड़प्पन लीन्ह॥५२९॥
 बिनु साधे बाधे गए, साधु न कहिए सोय।
 माया बेरी है बांकुरी, पगु में अटकी वोय॥५३०॥
 जैसे दूध जावन बिना, औ निर्मल मति जो होय।
 तैसे कर्म बिनु हंस होय, काया फिटिक गुन सोय॥५३१॥
 चलता बहता निर्मला, तव निर्मोलिक होय।
 साच सुगंध रंधहि खुला, परिमल अग्र समय॥५३२॥
 अग्र ग्यान उग्र कहि, पंथ पवन है सोय।
 खुली दृष्टि साधु की, पीठि पीछे नहि होय॥५३३॥
 नीच प्रीति जबहिं कियो, भयेवो बड़पन हीन।
 सदा सफेदा लील में, वागुन परगट किन्ह॥५३४॥
 अनंत मूरति कर्ता रचो, कला कौतुक सभलाए।
 पांच तत्व के पुतरी, नैन, झरोखा पाए॥५३५॥
 तामे दुख सुख सम्पत्ति, भूख पियास विराग।
 तामे उड़िगन चंद है, अगम निगम अनुराग॥५३६॥
 संगीन कटि यह शिव कियो, कृतम कृति रचो।
 जीव शिव कर्ता नहिं, पूजा बहुत मचो॥५३७॥
 जाहि पूजे सो देवता, जो पुजे सो कौन।
 बुद्धि जन भले विचारिए, बोलता भला की मौन॥५३८॥


बीजक बतावे बीत के, जौ बीत गुप्ते होय।
 शब्द बतावे पीव को, बुझै विरला कोय॥५३६॥
 बीजक राखे जीव के, चीज बड़ा है ग्यान।
 उलटि आपु आपु कंह देखिए, मुल बड़ो है ध्यान॥५४०॥
 काम बीज है उरध कमल में, मेरुडंड कसि जोग।
 सुख मनि सापिनि ना डसे, मेटा कल्पना सोग॥५४१॥
 सहस दल और सहस पुखंरी, खुला गगन में ऐत।
 सदा सर्वदा बुंद घन, मनि मोती तहां सेत॥५४२॥
 अउधी खोपरी उलटी देखु, झीन झीन जंतर होय।
 सोवत जागत धुनि तहां, उन मुनि पलटी वोय॥५४३॥
 ग्यान हुआ तब ध्यान है, भक्ति हुआ तब योग।
 जहां दया तहां धरम है, बृगस प्रेम संयोग॥५४४॥
 विमल विरोग विराग है, राग रहित है ध्यान।
 दीवाकर छवि देखिए, या झरि पलक अमान॥५४५॥
 रंझा रंझे वो जगत में, भक्ति केते भगवान।
 उदधि लहरि जब आवई, उलटत सांझ बिहान॥५४६॥
 ब्रह्मण्ड खंड ले नभ कला, कला करे प्रकाश।
 ताहि भजन के भजत है, भजन करे निजु पास॥५४७॥
 भक्ति भली है जगत में, सक्ति बड़ी है जोर।
 भगते आये भगता हुआ, चितवत चंद चकोर॥५४८॥
 सिंह ठवनि ठनकत रहे, पलक न करिए भोर।
 कसे कमाने बान गहि, निकट ना आवहिं चोर॥५४९॥
 विरह भेआवरि धमार की, पद अपने सभ पास।
 बिलगि बिलगि होई जीइहें, ज्यों ग्रीव डारिहें फांस॥५५०॥
 मन माया ते बांधिया, राधे परे अचेत।
 जम दारुन दावा करे, डारि दिया कुखेत॥५५१॥
 आपु स्वारथ यह स्वाद, परमारथ की चूकि।
 स्वारथ संग्रह साथ में, मुआ भवन में भूँकि॥५५२॥
 परमारथ जो पर के दीजै, पर आतम की चीत।
 भौ भागर यह भर्म है, नाहिं जमाना हीत॥५५३॥

पर आतम यह घात कहि, रता शक्ति के मंत।
 उलटि-पलटि भवसागर, परे विगुरचन अंत॥५५४॥
 चौरासी के जीव, मानुष की खलरी पेन्हे।
 खोजत मिले न पीव, जन्म कोटि भरमत फिरे॥५५५॥
 जात खलक-पलक में, मन माया के साथ।
 गुन ग्यानी गुन ग्यान करु, परे बिरानी हाथ॥५५६॥
 हसंराज गुन साज है, तेजो बिरानी प्रीत।
 आमृत प्रेम सुधा सम, चला सो भव जीत॥५५७॥
 कहि अनभौ कहि भौ कहे, कहीं कहे गुरु ग्यान।
 कहि जप तप संयम करे, तीरथ करे नहान॥५५८॥
 घर-घर सतगुरु ना कहि, जो कथे ग्यान विस्तार।
 सुकृत के सतगुरु कहि, जो हंस उतारहिं पार॥५५९॥
 वार कहें सो वार है, पार कहें सो पार।
 वारपार सब देखिए, दरिया दिल विचार॥५६०॥
 चला कुरंग रंग रंथ को, पंथ विसारे मूढ़।
 अटकि मुआ भटकि फिरे, जल बिनु परे अगूढ़॥५६१॥
 गए द्वारिका दर यहां, वर मांगहीं नवनीत।
 भर्म ही भवन विकार मत, नहिं सतगुरु से प्रीत॥५६२॥
 जहां गर्व तहां गत दहे, जहां भर्म तहां भीत।
 जहां सतगुरु तहां सबद है, जहां संत तहां प्रीत॥५६३॥
 पचि मुआ रोगी हुआ, बिनु बेरी हुआ बंद।
 करु सेवा सतगुरु की, काटि करम निहकंद॥५६४॥
 बड़े भेष अलेश सभ, काल बली धरि खाय।
 सो बाचे जो सांच है, सतगुरु सबद समाय॥५६५॥
 रामचरन पद प्रेम करि, नेम करहिं दिन राति।
 भेष धरे भरमत फिरे, काया कर्म की जाति॥५६६॥
 राम रंग सलिता भरा, त्रिगुन को गुन पाये।
 बोहित तरा जल उबरे, कनहरी कवन उपाये॥५६७॥
 राम एक अनंत नाम है, निर्गुण सगुण समेत।
 जैसे पावरी भावरी भई, जहां परसे तहां केत॥५६८॥

आखर दुनो जुगल है, जग जानत है ताहि ।
 निरंकार निर्गुन कहें, बिन आकार न आहि ॥५६६॥
 जैसे भंवरी सुत कातिया दुर्म-दुर्म लता समेत ।
 मीन जाल अति झीन है, मुनि मगन मन ऐत ॥५७०॥
 उदधि अगम उलंध किमि, गुन हैं अतित अपार ।
 सलिता सकल समात है, इमि करि चिन्ह करतार ॥५७१॥
 लागी सीढ़ी सरग से, सो जल लेहि उड़ाए ।
 ठंवर ठंवर यह सिंचिया, विविध रहा छितराए ॥५७२॥
 शरीर सिंधु मिथुन बसे, सक्ति संग हैं वीन्द ।
 बुंद घना यह परत है, उपजत बिनसत कीन्द ॥५७३॥
 भये बेचिन्ह जो मीन जल, जावत जग में ऐत ।
 फिर आवत फिर जात है, चौरासी के खेत ॥५७४॥
 कहिं पशुआ कहिं मीन है, कहिं रहे उर्धमुख झूल ।
 अपनी-अपनी बुद्धि यह, गये माया में भूल ॥५७५॥
 बहुत वनौरी बना भरा, राम चरित्र गुन ग्यान ।
 केते भेष विविध बने, सभ मिलि खोजे बेवान ॥५७६॥
 पांचों पण्डो गलि मुए बिसम्भर के देश ।
 वहाँ से कोई ना आइया, जासे पूछों संदेश ॥५७७॥
 ब्रह्मा तो आए नहीं, विष्णु भये विदेह ।
 जब जन्मे तब देह है, त्रिगुन लीला धरि खेह ॥५७८॥
 मन आवे नहिं जात है, इहाँ रहा अरुझाय ।
 सकल जीव के साथ में बिनु गुन कथा सुनाय ॥५७९॥
 सतगुरु वहां से आइया, सतपुरुष को अंश ।
 हंस वंश कुल राज मनि, इहां कहां वो वंश ॥५८०॥
 केते अपने मत चले, केते बटोही वाट ।
 सतगुरु मत नहिं जानहिं, सहे यम की साट ॥५८१॥
 घोंघा शंख समुद्र में, मुख दे रोवहिं भेष ।
 खसम बिना बहु पेखना, भरमे तीरथ अलेख ॥५८२॥
 हरिजन यह गुन जानहिं, नहिं सतगुरु का मत ।
 बिना खसम के तिरिया, पेखना करे अनन्त ॥५८३॥

पेखना तो तबहि लहे, जब देखना सतगुरु कंत।
 सोई सुहागिनि पिया मुख, मेटे भरम अनंत॥५८४॥
 बिनु जाने माने नहिं, कहि कवि कथा बहुत।
 केते जोगी पचि मुवे, कथि ब्रह्मा के पुत॥५८५॥
 सांच कहे जग मारिया, ताके मरिहें काल।
 भक्ति बिना भरमत फिरे, उर्धमुख सहते शाल॥५८६॥
 सीख भया विष ना गया, विष भुअंगम वास।
 तब फनि मनि यह पाइये, तब कहीं गुन दास॥५८७॥
 नैन फूटा हृदय फूटा, मोर पंख की क्रीति।
 देखत बहुत सोहावहीं, अन परचे की प्रीति॥५८८॥
 राम धाम कहे वाम काम में, साढ़ तीन का अंग।
 ऐसो सागर देखिए, तहां करो परसंग॥५८९॥
 अहे आगर भागर नहीं, भव में भया है नित्य।
 सागर तो खोजे नहिं, कहीं सलिता कहि शीत॥५९०॥
 सागर आगर मनि भली, हीरा मोती खान।
 सलिता में सागर नहीं, सागर सलितहिं खान॥५९१॥
 मानसरोवर संगम है, तहां बहा है सोत।
 खेत रेत नहिं आवहीं, जो जाकर है गोत॥५९२॥
 सार शब्द है पुरुष सो, पारस कहा गुन एत।
 नाम संजीवन मूल है, उपजे प्रेम समेत॥५९३॥
 ब्रह्मादिक सनकादिक, शिव समाधि दिन रात।
 सती सर्वदा संग में, विनय करे बहु भांति॥५९४॥
 की राम चरत्रि गुन सार है, की निर्गुन निर्लेप।
 कहे ग्यानी कोई ज्ञान मत, नहिं भव भर्म अलपे॥५९५॥
 निर्गुन से सगुन हुआ, सब घट व्यापक राम।
 सगुन से निगुन हुआ, अचल अमरपुर धाम॥५९६॥
 कोई आया कोई जाता है, कोई आतम राम।
 आपु गया तव सभ गया, जल थल किमि विश्राम॥५९७॥
 आवे जावे माया भली, एक विनसे एक होय।
 अचल आनन्द मंद नहिं कबहीं, अजर अमर गुन सोय॥५९८॥

जीव शिव सब जगत है, जहां लगी आतम राम।
 काम क्रोध और मोह बसी, भक्ति संग विश्राम॥५६६॥
 हंसे शिव अति प्रेम करि, जीतन चाहे मम ग्यान।
 कहें विरंचि वेद मत, या गति मति में ध्यान॥६००॥
 ब्रह्म एक फेरि अनन्त है, एक कला प्रकास।
 दर्पन फूटा टूक-टूक, जहां देखो तहां पास॥६०१॥
 जहां देखी प्रतिबिम्ब है, नहिं वर्तमानहिं रूप।
 दर्पन केरी सुन्दरी, नहिं गले लगावे भूप॥६०२॥
 प्रतिमा से पत होत है, सिंह त्यागेवो प्रान।
 फिटिक शिला गजदंत से, टूटा मुंह निदान॥६०३॥
 क्रोध भये शिव अंत में, जंत्र हमारो नाम।
 भर्म भई भटका फिरे, कहाँ बसावो धाम॥६०४॥
 जेहि दिन रावन सीया हरेव, नहिं सीया संग राम।
 ते सती सीता भई छल बल किन्हों काम॥६०५॥
 अन्तर्यामी हृदय कमल में, सब घट व्यापिक राम।
 चिन्हा सती सीता नहीं, तुरंत किन्हों परनाम॥६०६॥
 जाहु सती जहां शिव हैं, वोय कैलाशे वास।
 बदन छपायो लाज में, आइ हमारे पास॥६०७॥
 कर्ता है तीनि लोक का, त्रिगुन तिन्ह के पास।
 पारख परखहिं संत जन, चरन कमल को आस॥६०८॥
 सीता कमल नयन छवि, राजीत सुन्दर शरीर।
 हंस गवन हलुगे चले, निरखा राम शरीर॥६०९॥
 हम मृग नयनी दृग चली, औ चतुरता नारी।
 पगु चांती माती फिरे, रघुवर देखी निहारी॥६१०॥
 यह सीता मम ना होती, यह तो सती सरूप।
 जाहु जहां सीव लोक है, सभ भूतन के भूप॥६११॥
 भवानी कहे भरम नहिं, अहे सो निर्मल ग्यान।
 त्रेनी यह जगत में, वोए तो पुरुष अमान॥६१२॥
 आदि ज्योति मम संग रहेवो, तब सुनेवो पुरुष सत आए।
 ब्रह्मा से बातें भई, तब गुन राखा छिपाए॥६१३॥

तीन देव एक मत भए, अपनी-अपनी पांति।
 सत नाहीं गंमिआ, रहे गर्व से मांति॥६१४॥
 सतगुरु पद परचे नहीं, मन रावन है साथ।
 परे भवन में भर्मी के, सो जीचे भए अनाथ॥६१५॥
 तीन करता यह जगत में, चौथे निरंजन सुत।
 अपने-अपने बुद्धि चले, कहिं भैरो कहिं भूत॥६१६॥
 कर्ता एक सभ दृष्टि पर दृष्टि देखै जो खोल।
 कहे भवानी मत भला, अहे वचन अनमोल॥६१७॥
 मत हमारो झीन बड़ा, नहीं परे पहिचान।
 तुम्हें नचावों हाथ पर, भइ जगत में मान॥६१८॥
 कवि कथा प्रकाशहिं, बहु भांतिन के प्रीति।
 कच्ची पक्की चीन्हें नहीं, सो जीव जम ने जीति॥६१९॥
 कवि आखर यह कर्म है, कर्ता कवि ते भिन्न।
 या गति में सभ देखिहीं, अवगति की गति चिन्ह॥६२०॥
 जहां सांच तहां आपु है, निसदिन होहि सहाए।
 पल-पल मनहिं बिलोइए, मीठो मोल बिकाए॥६२१॥
 लोधिया को व्रत साच है, साचे सदा सुगन्ध।
 साच बिना व्रत काचव है, उलटी परे भव आंध॥६२२॥
 नाम देव साची गहेवो, साची निरंजन देव।
 आतम देव साचो भला, वाहि व्रत कहं सेव॥६२३॥
 हरि भगतहिं की बात है, हरिहर सुमिरहिं नीति।
 गुड़ देखाय ईट मारहीं, कवन तुम्हारी प्रीति॥६२४॥
 लक्ष गाय नृग नित दान करि, अंधकूप में वास।
 तव तुम्हें नहिं त्यागहीं, भला तुम्हारे दास॥६२५॥
 पांचों पांडों गति मुए, यहि तुम्हारी प्रीति।
 इत आये नहिं उत गये, खड़ी भरम की भीति॥६२६॥
 दोनों तरफ की प्रीति है, दोइत दिल से दूरि करे।
 गहो अदोइत नीति, एक व्रत सत भक्ति धरे॥६२७॥
 हरिशचन्द्र समान दानी नहिं, सुत और नारी समेत।
 जाये बिकाने हाट में  हारें हेत॥६२८॥

निगम नेति निजु हितकारी, दान किन्ह बलिराज।
बावन होय बलि जांचिया, एही तुम्हारो काज॥६२६॥

ऐसा छल बल को करे, जो बंधा परे पताल।
हरिजन हरि के जानहिं, एहि हमारो लाल॥६३०॥
मोरध्वज बड़ धरम करी, घरेवो धरनी एक संत।
भेष भला भगवान है, एहि हमारो मंत॥६३१॥
आपु गोपाल काल होय, भला गए वोहि ठांव।
आरा सिर पर लाइया, भला तुम्हारो नाव॥६३२॥
आपुहिं पाले आपहिं मारे, आपुहि करे निहाल।
हरि भगतन्ह मिलि मत ठानेऊ, आपुहि कर्ता काल॥६३३॥
जो कर्ता सो काल नहीं, उह कर्ता काल सो नांही।
चिन्हें बिना परी पंच है, हरि भगतन्ह की वांही॥६३४॥
कनहरिया कर गहि लिन्हों, अरध जल परी सो नाव।
नाव फुटी पतवार टूटी, बसेवो तुम्हारे गांव॥६३५॥
इत आये नहिं उत गए, परा हिलोरा मध।
सिन्धु जहाजे चढ़ि के, चढ़े तुम्हारे कंध॥६३६॥
नाम जहाज सुरति डोरी, इहां उहां है टेक।
जबहिं हंस गवन करे, गये सो बहुत अनेक॥६३७॥
जो कोई गया आया नहीं, यहि मुक्ति का अंत।
जाहि सुमिर सुख पाइये, भलो हमारो कंत॥६३८॥
पुहुप पलंग है पुहुप बिछौना, पुहुप बांधे सिर नेत।
अमृत झरि चाहूँ चाखहीं, है सुखसागर ऐत॥६३९॥
ग्यानी जग में जानिए, यह सब मन का रंग।
दोइत पक्ष में पचि जात हैं, एहि तुम्हारो संग॥६४०॥
ज्ञान को रंग यह रहित है, इमि अविगति की बात।
पंडित मरम न जानहिं, इमि कहे दिन रात॥६४१॥
बीज बीज भए एक रस, खेत आए जो होय।
कहीं दृघ कहीं लघु हुआ, उलटि परेगा सोय॥६४२॥
यह सभ मन की प्रीति है, तप से मांगत राज।
राज एक जग विदित है, यह सभ सकल समाज॥६४३॥

कवि के खंड ब्रह्मंड है, खंडित कबहिं ना होय।
 काल डंड यह डंडेवो, जो नृप जग में कोय॥६४४॥
 राज सोई जेहि साधु देखे, धन है जग में ओय।
 आतम दरश सदा करे, बड़ी भगति है सोय॥६४५॥
 मेदनी मद परचंड है, बीस भुजा दस शीश।
 रज में राज मिलाइए, यह गुन दिया जगदीश॥६४६॥
 दुइ भुजा नर पाइके, करे घनेरी टीस।
 रावन राज में मिल गया, बीस भुजा दश शीश॥६४७॥
 चुनि-चुनि मारेवो सुरमा, जेहि जगत रहे सभ जानि।
 विरले लाल भाल मनि, औ हीरन की खानि॥६४८॥
 पहिरि सिलाह साज सभ, बिचलि चले छोड़ि खेत।
 जापर सुकृत साच दिल, भयऊ ब्रह्म निकेत॥६४९॥
 सिंह निकट नहिं आवहीं, सुकट सो करि प्रीत।
 साधु सिंह मत सरस है, लियो मतंगहिं जीत॥६५०॥
 मन मतंग माते फिरे, डर खाये सभ जीव।
 उलटि जंजीरे बांधिए, यहि तुम्हारो पीव॥६५१॥
 आंकुश देत चिकरत फिरे, सुढ सो करि परनाम।
 परे तुम्हारे कैद में, पलक दीजै विश्राम॥६५२॥
 दरिया ज्ञान है चकवे, अवर ज्ञान हर मीर।
 सो सतगुरु अस जानिए, जिन्हि मेटा यो सकल तन पीर॥६५३॥
 भक्ति भला है जगत में, किया भजन का टेक।
 भेख अलेख बहुत परे, भर्मत बूड़े अनेक॥६५४॥
 दिल अन्दर दर्दे बसे, पर्दा चादरी बीच।
 पारखी मेरो साईया, लीन्ह तीर कंह धैच॥६५५॥
 नारद मन नहिं बोधेवो, साधन नहिं गुरु ग्यान।
 और चले परबोधने, बीच शक्ति को घ्यान॥६५६॥
 साधन राधन ज्ञान नहिं, बोझ लिए सिर मोठ।
 खरी कसौटी ना सहे, है हीरा पै खोट॥६५७॥
 देखा पसारा काल का, पुरुष दिया हद पाय।
 कैद किया मन चिन्हके, जीव के लिया छोड़ा॥६५८॥

पढ़ि कुरान फाजिल हुआ, हाफिज की ऐसी बात।

सांच बिना मैला हुआ, जीव कुरबानी खात॥६५६॥

दर्वेशा दिल दर्द है, दर्वेशा दर्वेश।

दर्वेशा दरसत रहे, दर्वेशा नहिं नेश॥६६०॥

आये गोपाल गोप में, गोविन्द गंध सुगंध।

गन्धर्व औ गंध लागिया, राग कियो व्रतबंध॥६६१॥

वहां समीर साधुन्ह लगा, करते कौतुक कीन्ह।

यह लीला कहं गाइया, कबहिं ना होखे भिन्न॥६६२॥

तेवो फकरो दिल चस्मे, रोशन करो चिराग।

दर्द राखे दर्वेश है, फेरि मरना है खाक॥६६३॥

सतगुरु से नहिं एकता, बके सो बात असाधी।

विषय बेइल बन फूलिया, लिन्ह भंवर कह बाधी॥६६४॥

साधु स्वाद नहीं चाहहीं, अमृत रस नाही हेत।

झरी चाहु चाखा करे, परेऊ कबहीं नहिं रेत॥६६५॥

सोई सोहागिनि साच है, पदुम झलके शीश।

औरि श्वान हैं शुकरी, करे खसम से रीश॥६६६॥

शि शक्ति यह दुई है, जुगल कोई नहीं जाये।

जाके भक्ति है साधु संग, चला बेबान उड़ाये॥६६७॥

पतिवरता पति जानहीं, सब विधि पूरन काम।

त्रिया अनेक हम देखिया, रही रतन एक वाम॥६६८॥

गुन कहि तो कत कहि, ऐगुन नाहिं शरीर।

पतिवरता वोय सत हैं, मेटवो सकल तन पीर॥६६९॥

शाह मति सरकार में, निस दिन धरती ध्यान।

जैसे पपीहा पिया-पिया, रटे सो सांझ बिहान॥६७०॥

साहेब अजर हमार है, निस दिन आठो जाम।

शाह मति छपलोक में, तहां करे विश्राम॥६७१॥

दयानिधि सर्व ऊपरे, सभ विधि पूरन ग्यान।

शाह मति छपलोक में जहवां पुहुप बेवान॥६७२॥

यह मिथ्या जनि जानिए, गये सो भव जल जीत।

सतगुरु पद पावन किया, यही हमारी रीत॥६७३॥

जिन्ह तन मन अरपेवो सीस, सोई सोहागिनि जगत में।
 कर्म भरम सभ पीस, पिया पर प्रेम लगाइया॥६७४॥
 नैन झरोखा झांकिया, जोजन चाटी है ऊंच।
 हंस वंश गुन राज यह, फेरि देखै नहीं नीच॥६७५॥
 ध्रुव मंडल अस्थान है, तब दीसे नहिं वोय।
 हंस गवन निश्चय हुआ, सुरति संजोये सोय॥६७६॥
 साढे तीन में चतुर है, साढे तीनि में भूत।
 साढे तीन में तर्क है, भया जोगी अवधूत॥६७७॥
 साढे तीन सलिता तिनु, मीन झलके चंद।
 चिन्ह परा तेहि घाट पर, जो सब का है मंत॥६७८॥
 अनसुनी सुनी कहे, बिनु देखे बेचिन्ह।
 सतगुरु से परचे नहिं, भइ कहा की भिन्न॥६७९॥
 सोहागिन तो कैसे होखे, केहि विधि मिले पीव।
 तन मन अरपेवो जानि के, तब बाचेगा जीव॥६८०॥
 जीवन तो मृथा बुझो, मरना सांझ बिहान।
 कुमुदिनि चंदा प्रीति है, कहाँ उगे असमान॥६८१॥
 एक रस पिया पिया कंह जानी, बहुरस कीजै दूर।
 बहु तन सेवे खावनी, बीसनी खड़ा हजूर॥६८२॥
 सुकट स्वाद न त्यागही, विकट बड़ा है निधि।
 पवन सोन से प्रीत है, यही तुम्हारी सिद्धि॥६८३॥
 झख सेंधु असंख्य है, ज्ञान चाहत नीत।
 जब पावे तब चौगुना, बिसरी हरी सो प्रीत॥६८४॥
 झोरी जिन्ह ने ना बोरी, शक्ति सेंधु के पास।
 भला जोग जागृत हुआ, जग ते फिरे उदास॥६८५॥
 एक मेरु एक दंड है, दोय दंड निश्चय होय।
 जो साधे सो जोगिया, चले न भव जल रोय॥६८६॥
 पवन चले पांजी मिले, गाजी पैठा वोय।
 जहां कंज को गंज है, नैन झरोखा सोय॥६८७॥
 पहिले गुड़ शक्कर हुआ, चीनी मिसरी किन्ह।
 मिश्री से तब कंद भव, यहि सोहागिनि चिन्ह॥६८८॥

एता गंजन गंजि के, तब मंजन निजु प्रेम।
 सदा सोहागिनि पिया पंह, छुटी गया भर्म नेम॥६८६॥
 मंजन मइल जो जात, सज्जन जन की रीत।
 अघपातक जरि जायेगा, कर सतगुरु से प्रीत॥६८७॥
 कर्म पहाड़ यह ना टरे, टारेगा कोई संत।
 ग्यान छेनी से काटिये, यह सतगुरु का मंत॥६८८॥
 कपट काटि कंटा काटेव, काटि बेइलि भौ पंत।
 ग्यान कुल्हाड़ी कर्म बन, काटियाँ सभ अंत॥६८९॥
 कवि कर्ता वक्ता बड़े, भक्ति चिन्हे नहिं कोय।
 नृप के घर आदर भला, सुगा सेमर जनि होय॥६९०॥
 नख सिख निरखहिं नर कहे, नख सिख कवि को राज।
 कनक सोभा कामिनि कहे, भूषन बसन है साज॥६९१॥
 भुजा कहे मृग नाल है, जंघ केदली खम्भ।
 मृगनयनी दृग देखते, अर्ध अमी का रम्भ॥६९२॥
 चन्द्र बदन छवि छाइया, शीतल सर्वदा अंग।
 कवि मृग मद्य जो मातिया, काल करेगा भंग॥६९३॥
 निरंजन अंजन नहिं, भजन करे सभ संत।
 बिनु अजन सज्जन, भला तुम्हारो मंत॥६९४॥
 राम कहां ते आइया, कवन वृक्ष का बीज।
 राम कहो रमिता भला, त्रिगुन ते भयो छीज॥६९५॥
 अक्षय वृक्ष के सखा है, इहां कहावे मूल।
 फूल ते फल यह लागिया, रघुपति दशरथ कूल॥६९६॥
 मन मारे मुए नहीं, पारा मुवे ना जीव।
 अहे सजीवन सर्वदा, गुप्त महातम पीव॥७००॥
 पारा राखे तो जोग है, भोग किए घट जाय।
 जब बैठे ब्रह्मांड में, अद्भुत कला देखाय॥७०१॥
 यही जीते खुश वोय हैं, यही चमेली बास।
 यही घानी घन देखिए, भंवरा लोभा सुबास॥७०२॥
 वाही ते फनि मनि बना, सब विष मेटि जाय।
 बूंद परे विष जात है, तब फनि मनिहिं बनाय॥७०३॥

जीतन जीतन सब कहे, यह जीत लियो नौ खंड ।
 आदि अंत मुनि जगत में, काम बढ़ा प्रचंड ॥७०४॥
 सतगुरु के पारस भला, शब्दे दिया लखाय ।
 अपने बुझे राज है, अनबुझे पछिताय ॥७०५॥
 चौरासी बाचिहो, जो चतुर चित नहिं होय ।
 सतगुरु से साचो रहे, दुरमति घाले धोय ॥७०६॥
 दुर्मति सभ होय दूर, पुरी परे तो दाव है ।
 यह चतुराई चोर, प्रेम चुभे तो मगन है ॥७०७॥
 सहस अट्ठासी मुनि भए, परचे बिना विनाश ।
 सोई पहरु सोइ चोर हैं, रहे सभन्हि के पास ॥७०८॥
 ब्रह्मे जाय बुझाइया, चिन्हों ब्रह्म निरलेप ।
 यह सभ जन्मे योनि से, वोह मरे जीवे नहिं खेप ॥७०९॥
 त्रियदेवा को मत भला, मिला शक्ति के पास ।
 कहो कहां ते आइया, कथनी कथे उदास ॥७१०॥
 छपलोक से आइया, सतपुरुष के दास ।
 तीन लोक जम लुटिया, डाल दिया ग्रीव फांस ॥७११॥
 नारी जो होती नाहरी, हाथ लागी तरवार ।
 संत चले हरि मिलन के, बीचे लिन्हो मार ॥७१२॥
 हाथे सभ हथियार हैं, तरकस तीर कमान ।
 तेग कामिनी का लागिआ, टारी दिन्हों मैदान ॥७१३॥
 हम कहं जप तप संयम है, और गायत्री ध्यान ।
 चारों वेद मुख में बसे, कहां तुम्हारो ग्यान ॥७१४॥
 ऐसा माता जगत में, भग में अरुझे झार ।
 पुरुष मर्म नहिं जानहिं, संग लिए बहु आर ॥७१५॥
 समझोगे मन बावरे, जब धरि पटकिए शीश ।
 बाजीगर के हाथ में घर-घर नचिहों कीश ॥७१६॥
 फुटुकाये फुटुके नहिं, मरकट ऐसी बांध ।
 कटकटात मरि जाहुगे, पूजा तुम्हारी साध ॥७१७॥
 विष सम सतगुरु शब्द है, झूठ लागे तुम्हें मीठ ।
 बहुत लबेदा खाहुगे, तब टूटेगा पीठ ॥७१८॥

चित चेतनि को काम हैं, जड़ से कहा बसाय।
 पाहन में गहि मारिए, तो चोखो तीर नसाय॥७१६॥
 ऐ बेदर्दी दरद करु, परआतम नहीं घात।
 घात किये नाहिं बांचि हो, बाधे यमपुर जात॥७२०॥
 टेरी टेरी बहुवचन कहि, बहुविधि कहेव पुकार।
 धर्मराय कागद देखा, देहि कोड़न की मार॥७२१॥
 चारि पहर बकते कैसे गया, चारि पहर रहे सोय।
 कहो कुशल कैसे परे, साधु सेवा नाहिं होय॥७२२॥
 मरना फेरि-फेरि डरत है, डरो नरक की खान।
 यम बांधे साधे फिरे, विषम सरोवर तान॥७२३॥
 पानी केरा बुदबुदा, इमि पल मांह बिलाय।
 कहो खोजी किन्ह पाइया, कहे कहानी आय॥७२४॥
 सतगुरु आस छोड़ाइया, छूटे शबद के साथ।
 कहे दरिया तब बांचि हो, ग्यान रतन लिए हाथ॥७२५॥
 हम सो तुम सो अंतर नाहिं, जंत्र हमारा नाम।
 रैयत अपना रंग में, दबे दबाये दाम॥७२६॥
 फका करे फकीर है, फर्क वाही को नाव।
 नवमीत तुम्हारे हाथ में, राह बसावो गांव॥७२७॥
 वचन सदा प्रति पालिए, तुम सो सदा अधीन॥७२८॥
 अन्न कपड़ा यह दीजिए, नाहिं गज बहुत तुरंग।
 खुशी तुम्हारी चाहिए, नाहिं राव रंक को संग॥७२९॥
 साधु राव न रंक है, साधन हैं गुरु ज्ञान।
 सदा सर्वदा उदित हैं, काल हुआ पिसिमान॥७३०॥
 निर्गुन तो निरंकार कही, वेदमता यह जान।
 जाके शीश न पांव हैं, भली भक्ति में मान॥७३१॥
 जल में जल जो डारिए, कहो कवन गुन होय।
 सूखे में जल डारिए, साली सोहावन होय॥७३२॥
 जाके अन्न घर वन भरा, उसर जानिए ऐत।
 भूखे के जो दीजिए, वोइए बीज सुखेत॥७३३॥

भूखा खावे आतम पोखे, महा पुन तेहि होय ।
 धन्य-धन्य कहता रहे, जागि महातम सोय ॥७३४॥
 दुखिया दुख यह जानिए, सुखिया सुख की बात ।
 वाके घाव है पेट में, वाके कहना बात ॥७३५॥
 परमारथ एक पार है, उड़ा फिरे विहंग ।
 भूखे को जो दीजिए, धरम न होखे भंग ॥७३६॥
 माया काहु के बस नहीं, नाहिं काहु के साथ ।
 ज्यों आवे त्यों जायेगी, कारिख लागा हाथ ॥७३७॥
 माया मइल हिय में बसे, सापिन कारि पास ।
 डसत फिरे मुनि जगत में शिव कहे विश्वास ॥७३८॥
 डंसि ब्रह्मा विष्णु महेश के, डंसी जग में जोगी केत ।
 ऋद्धि-सिद्धि के जपत हैं, यही तुम्हारा हेत ॥७३९॥
 ब्रह्मा के ब्रह्माइन, मोती झलके केश ।
 भूषन नख-सिख बनाइके, लिया तुरंते पेश ॥७४०॥
 षट् रस विजन बनाइके, खाहु हमारे कंत ।
 गले लगाइके सोइये, यही हमारो मंत ॥७४१॥
 विष्णु के संग लक्ष्मी भली, लक्ष्मी वाको अंग ।
 निसुवासर ना त्यागहिं, मिलि गया एक रंग ॥७४२॥
 अति सुन्दर छवि सरस है, छवि छाये सर्व अंग ।
 नख सिख भूषण झलाझलि, भला बना है संग ॥७४३॥
 रूद्र संग रूद्रनि बसे, बोलत कोकिल बैन ।
 भलि पद्मनि पदुम है, भंवर लोभाहै नैन ॥७४४॥
 नाच करावहिं नाथ से, ऊंचे नीचे दे हाथ ।
 आपु सिद्धि पति बैल पर, भला बना है साथ ॥७४५॥
 त्रीय देव कृतम कही, करता उनते भिन्न ।
 उत्पति परले हाथ में, वाको देखिए चिन्ह ॥७४६॥
 तीत काहु जन लागई, मीठा भला है ग्यान ।
 जीव धरि जम ले जाएगा, पड़ी रहेगी म्यान ॥७४७॥
 करता कहते दिन बिता, रैन गई सभ बीत ।
 अजहु प्रभु नहिं आइया, किन्ह विलमायो मीत ॥७४८॥

मित हित एक चाहिए, प्रीति तुम्ह से कीन्ह।
 सुख सर्वदा चाहिए, दुःख काहे के दीन्ह॥७४६॥
 कल्पना मेटे कल्पतरु, की साधुन के साथ।
 की मेटावहिं साहेब धनी, जीवन-मरन जेहि हाथ॥७५०॥
 साधु बड़े साहेब किया, साधु संग तेजु स्वाद।
 करो भजन नैनीत ऐह, पुलकित प्रेम समाद॥७५१॥
 पलपल छन-छन जानिए, एक घरी या आध।
 ऐसी संगत साधु की, जल पर बाँधे वो बांध॥७५२॥
 हरिजन कहो जाने बिना, जनम प्रसंग को प्रीति।
 जाने तो पहचानिए, एहि हमारो रीति॥७५३॥
 सतगुरु का मत एक है, साधु मिले सुख होय।
 विविध मता बहुवचन है, अमृत चला बिगोय॥७५४॥
 अमृत विष भाजन बना, रचा भर्म का खेत।
 भय भाजन जब काटिया, नहिं परेगा रेत॥७५५॥
 यह खोज साधु कीन्हा, साधु मता जहां होय।
 मिटे कल्पना कष्ट यह, भक्ति महातम सोय॥७५६॥
 राम नाम दुइ पंथ है, तीजे सतगुरु ग्यान।
 जैसे कला है भानु की, फिरता सांझ बिहान॥७५७॥
 त्रिगुन रूप मत मुनि कहा, एह साधुन मत।
 सतगुरु विनसी निर्गुन कहे, यहि हमारो कंत॥७५८॥
 राम कहि फिर नाम कहि, राम नाम है एक।
 दुवो परस्पर एक है, सतगुरु शब्द विवेक॥७५९॥
 नाहिं राम नाहिं नाम है, नहिं शक्ति नहिं शिव।
 ओय सतवर्ग तो एक है, जथा जगत सभ जीव॥७६०॥
 साधु सरस गुन विदित है, विमल सदा पद एक।
 जब समुझे तब एक है, भरमत तीरथ अनेक॥७६१॥
 सतगुरु ग्यान हित रहित है, पद पंकज को ध्यान।
 दरशन से वृगसित रहे, जैसे कमल पर भान॥७६२॥
 जलहिं ते जल होत है, जल में उठत तरंग।
 निर्गुन सगुन इमि जानिए, दुवो मिले एक संग॥७६३॥

सेंधु सोई निर्गुन हुआ, सगुन सो लहरि तरंग।
 सतनाम तरनी तारी, तरत होखे नहिं भंग॥७६४॥
 एक जल ते कृषि गले, परले करे भुअंग।
 एक जल जग पालिया, इमि करि जानु सुगंध॥७६५॥
 काशी जनम कबीर का, काशी शिव को बास।
 काशी जन्म है वेद का, काशी यम का फांस॥७६६॥
 काशी में सब तप करें, भेष अलेख संन्यास।
 काशी मोहिनी मगन है, लिए फिर यम फांस॥७६७॥
 सभे ठगावे ठग से, विरला बाचे संत।
 ठाकुर ठग जब चिन्हिए, सो सतगुरु का मंत॥७६८॥
 काशी तीरथ सरस है, काशी तीरथ नहाए।
 काशी करम नहिं चिन्हहिं, गंगा धार बहि जाए॥७६९॥
 गंगा सपत पताल है, संगम सेंधु हैं एक।
 कहि खारो मीठा हुआ, ऐसी भक्ति विवेक॥७७०॥
 अरुझे शेष महेश सभ, अस्सी वरना के तीर।
 काशी स्त्रींग सोभावना, भजे सभे रघुवीर॥७७१॥
 धरम किए कल्याण है, धरम राय के साथ।
 सो धन धरम न बूझि है, चलो मरोरे हाथ॥७७२॥
 साच कहे तो भगत है, भजन माया के संग।
 त्रिगुन का यह धार है, उठत लहरि तरंग॥७७३॥
 जो बुझे सो साधु है, अनबुझे विष खात।
 कहे दरिया दर देखिए, चिन्हे शीतल तात॥७७४॥
 देवल द्वारिका दर्श है, परसत मुरति अनूप।
 मुरती धरा यह देवल में, घट में नहिं परतीत॥७७५॥
 भर्मि भर्मि मरकट फिरे, घट में नहिं परतीत।
 अग्यानी ग्यान होय, चला सो भव जल जीत॥७७६॥
 जगन्नाथ जग जानहीं, वाको कला अनंत।
 कृतम के कर्ता कहे, नहिं तुम्हारो कंत॥७७७॥
 लाल लगन ललचत फिरे, धन सतगुरु का पंथ।
 अरथ कहानी अर्थ है, कथनी भइ अकथ॥७७८॥

नौ नाटा का पट लगा, नहिं मुद्रा चारों घाट ।
 कर्म जोग के जागबे, नहिं खुला गगन कपाट ॥७७६॥
 चक्र फिरे मोती झरे, निरति देखे नवनीति ।
 सजल नैन को मुनि के, कियो पवन से प्रीति ॥७८०॥
 गुफा में गर्जत रहे, मन का गर्ज अनंत ।
 माधो की मुरली भली, इमि कर शबद ना भंग ॥७८१॥
 जुगति जाने तो जोग है, जुगति बिना किमि साधिए ।
 व्याधि चिन्हे नहिं रोग, जब सतगुरु साच मिलए ॥७८२॥
 मेरुदंड चिन्हे नहिं, करे पवन का साधि ।
 कबहिं के उल्टा परे, लीन्हे तुरंते बाधि ॥७८३॥
 सहस पंखुरी कमल है, मघ लगा तेहि तार ।
 मनी मुद्रा जब पाइए, जात न लागे वार ॥७८४॥
 भक्ति पूछो तो भक्ति कहो, जोग पूछे तो जोग ।
 ग्यान पूछे तो ग्यान कहो, मेटा कल्पना रोग ॥७८५॥
 भक्ति जोग विराग रस, ग्यान भजे सुख चैन ।
 बाकि छै नहिं होत है, देखिए अपने नैन ॥७८६॥
 कवि के बात अकथ है, वक्ता चारु वेद ।
 एह सलिता वोह सेंधु है, तामे एक निखेद ॥७८७॥
 एक-एक सभहिं कहा, अक्षय वृक्ष है एक ।
 नाना भेष भगवान है, विरले शबद विवेक ॥७८८॥
 जहां देखो तहां तपत है, पानी में है आग ।
 मीन निकल के भागिया, चला नदी के त्याग ॥७८९॥
 सुरा सोई सराहिए, सरव धनी का हेत ।
 मुख पर तीर विरातहिं, तबहुं ना छोड़े खेत ॥७९०॥
 लड़ते-लड़ते दिन गया, कमर कटारो वाक ।
 ग्यान घोड़ा मैदान में, दिया सम्भारी के हांक ॥७९१॥
 नारि भली बहु नाएका, वाको खसम कपूत ।
 नहिं दुनिया नहिं दीन में, लहिं जोगी अवधूत ॥७९२॥
 कमर कटारी बाधि के, पिया मांगे हथियार ।
 नहिं पिया तुहुं लड़हुगे, साचो भागनीहार ॥७९३॥

बार-बार के भाग ते, खबरि ले जानीउ कंत।
 अवरि के बार ना बाचिहों, धरि के तोरिहैं दंत॥७६४॥
 धन दे जीव यह राखिए, जीव दे राखिए सरन।
 समुझि मंडो मैदान में, फिर आखिर निजु मरन॥७६५॥
 सुरा रन में पैठिके, काको ढूढ़े साथ।
 साथी तेरा तीन है, हिया कटारी हाथ॥७६६॥
 जो त्रिया होय सुलक्षणी, औ कपूतहिं कंत।
 राज काज सुख वेल से, चिखुर छोटा घन दंत॥७६७॥
 सोई कर्कसा नारि है, निसदिन करे उपाधि।
 जो फल लाया सो खाहुगे बिनु वेरी गया बांधि॥७६८॥
 वेरी तोरि तर्क करो, छोड़ दीजै वह ठांव।
 साधु मत सतगुरु दया, गया अमरपुर गांव॥७६९॥
 अमर चीर औ पुहुप अमर है, वृगसे बहुत सुबास।
 अमरपुर में बैठिए, कहे दरिया सुनो दास॥८००॥
 यम जीव करे न घात, अमरपुर अमृत पियो।
 इमि सतगुरु गुन ग्यात, भला जन्म सुफल भयो॥८०१॥
 भवसागर यह मर्म है, भागर बहुत अनीति।
 सुखसागर यह पार है, छोड़ी बिरानी प्रीति॥८०२॥
 सतगुरुष अगम अपार है, अगम कहा समुझाए।
 ताहि सरन के गमि करो, सकल भरम मेटि जाए॥८०३॥
 प्रीति करो सतगुरु से, छपलोक की बात।
 पुहुप बिछौना पाइहों, निर्मल तुम्हारो गात॥८०४॥
 सहस अट्ठासी द्वीप है, ताहि मध्य छपलोक।
 शृंग शृंग सभ छत्र है, तहां विपति नहिं सोग॥८०५॥
 निगम पूछो तो ना कहे, ज्ञानी पावहिं अंत।
 बेवाहा हमें देखाइया, तब जाना निजु मंत॥८०६॥
 बैकुण्ठ चारि दिसा बना, चारु है ब्रह्मलोक।
 चांद सूरज दिन रइनि है, तहां पवन का झोक॥८०७॥
 अति उत्तंग अति गति बना, हंस तखत के पास।
 रवि चंदा रजनी नहिं, तहां पहुंचे कोई दास॥८०८॥

ज्यों हीर जगमग ज्योति है, हीरों के प्रकाश।
 सोरह कला वहाँ हंस है, पुहुप द्वीप में वास॥८०६॥
 डर खाये डरता रहे, सतगुरु जाने हीत।
 पहुँचेगा छपलोक में, शब्द न होहिं अनीत॥८१०॥
 अच्छा अवेहा जन होखे, पुरुष वचन यह सांच।
 जो झूठा करि मानिहैं, सोई सर्वदा कांच॥८११॥
 बैकुण्ठ लोक में जायेगा, कृष्ण कहा निरलेप।
 फेरि आया फेरि जाएगा, आवागमन को खेप॥८१२॥
 चौरासी के चक्र पर, बड़ा कल्पना पाए।
 यम दारुन दावा करे, कहे दरिया समुझाए॥८१३॥
 हमसे सतपुरुष कहि, छपलोक की बात।
 जो धोखा करि जानिहैं, मुंह टूटे गुड़ खात॥८१४॥
 दुवो दिल जब एक होय, तब बनी बनाई हाथ।
 परिपंचि करिम के बड़े, सीख परा पचि साथ॥८१५॥
 रोगी चाहे सो वैद्य बतावै, वैद्य करे घात।
 सीख चाहे सो गुरु कहे, तब बिगरेगी बात॥८१६॥
 साचो गुरु साचो वैद्य है, साचो बात बनाए।
 बनत बनत जो बनि परे, तब साखे मत पाए॥८१७॥
 सतगुरु को मत भिन्न है, गुरु को मत है कान।
 आंधर केरि आरसी, देखे ना सांझ बिहान॥८१८॥
 जब देखे तब मानिए, सुनि कहानी बात।
 ग्यान रतन की आंख में, सुझि परे दिन रात॥८१९॥
 आंधर अरसी ना देखइ, हृदय न करु प्रकाश।
 दुइ चस्मे दिल अंदरे, तहां सतगुरु को बास॥८२०॥
 नहि सूझे बड़ चतुर है, हृदया वाकी खोट।
 झूठी बातें बांधि के, लाया करम का मोट॥८२१॥
 कण कण बढ़ा भरम जाल है, भर्मे बहुत कुरंग।
 धोखा देखी धावा फिरे, बिनु जल है रथ रंग॥८२२॥
 वाट राह में मिल गये, एक ब्राह्मण एक नाई।
 वह हाथ उठाय आशीष दिया, इन अरसी दिया देखाइ॥८२३॥

छुधावन्त दोनों बड़े, देवे तो कछु खाय।
 खाली मिले बाट में, बहुरि चले पछताय॥८२४॥
 जैसे को तैसा मिले, परा गगन का रेत।
 भागर को जल अचवन, गया तुम्हारा चेत॥८२५॥
 चित्र चित्र के बीच में, तहां बसे एक मीत।
 पल में बिछुरन करत है, तहां पल में कहिए हीत॥८२६॥
 पल काम है कामिनि, पल में जल थल वास।
 हम सोई यारी ना करे, जगत वाही को दास॥८२७॥
 जिन्हि के हमको चिन्हिया, मेटा भर्म का चिन्ह।
 अमर करो आमृत जहां, भए हंस प्रमीन॥८२८॥
 सुख:दु:ख औ भूख नहिं, मेटा जल को प्यास।
 हुआ निर्मल मल ना तहां, अजर पुहुप विलास॥८२९॥
 दरिया दर के देखिया, वा दर परदा दिन्ह।
 जो जन दर के देखिया, होहिं कबहिं नहिं भिन्न॥८३०॥
 नैन फूटा और पर टूटा, करि को कवन उपाय।
 पांव तोरि लंगर हुआ, कइसे पहुंचे जाय॥८३१॥
 जम्मू द्वीप का मध्य में, सतगुरु होहु सहाय।
 अवरि के वार उतारिये, रहो चरन लव लाय॥८३२॥
 मुनि सभ बड़े वसिष्ठ बड़ा, बड़े व्यास की वेद।
 सुखदेव भला निजु मत रहे, विमल प्रेम को भेद॥८३३॥
 सभे भला औ भले साधु हैं, भले जोगी अरु संत।
 जोग जीत मम नाम है, कहा मुक्ति निजु मंत॥८३४॥
 मन का रंग सो जो मते, मनहिं का बिसराम।
 ग्यान काम ते जो रते, हृदया से तन स्वम्॥८३५॥
 ग्यान कहे विग्यान कहि, नहिं ग्यान कर नाश।
 एक मुए एक राज है, तव गुन करो प्रकाश॥८३६॥
 मन का रंग यह विविध है, जेता धरे सरूप।
 जेहि मन कहो सो कृष्ण है, दर्शन सदा अनूप॥८३७॥
 कहां भागि के जाएगा, जाल बड़ा है झीन।
 जब सागर के देखिए, पड़ते भया वे चिन्ह॥८३८॥

मम तुम्ह में मन एक है, पावसी सनाही हाथ।
 या मन वा मन चिन्हिए, तब जीव होय सनाथ॥८३६॥
 नामे सभ कह खात है, नाम सुमिरन किन्ह।
 दुइ पर्वत का बीच में, परा काहु नहिं चिन्ह॥८४०॥
 नाम से यह राम है, जाके कहे विदेह।
 एके पैठा सकल में, भला लगा वो नेह॥८४१॥
 कहि-कहि मम कह दिया, देखना निकट है दूर।
 जाकी महल बताइया, सोतो हाल हजूर॥८४२॥
 जोगी तो जाने नहीं, पंडित के घर मीर।
 कहो कहां ते मारिहो, बिना कमाने तीर॥८४३॥
 जाम का जामा बना, शक्ति बना औ शिव।
 दुवो के बीच में एक है, पकरि लिया है जीव॥८४४॥
 परे बिराने हाथ में, जंगम जोगी शेष।
 तिलक माला सोहावना, विविध वना है भेष॥८४५॥
 कष्ट कल्पना देखि के, तब हम किया पयान।
 मन के रंगे रंगिया, है कछु कथा अमान॥८४६॥
 भर्मना भव में सुख है, दुःख हमारी बात।
 फेर पीछे पछताइहो, जब द्रुमति करहि निपात॥८४७॥
 खास खसम चिन्हे नहीं, बसा बिराने देश।
 जाको परजा सकल है, वो भी बड़ा नरेश॥८४८॥
 चालीस सेर का मन है, ताको एक सरूप।
 निरंजन अंजन धरा, भए जगत को भूप॥८४९॥
 दुइ नरेश एक देश है, पिता दुनु का एक।
 जासो प्रेम पाला करे, शबदे बीच विवेक॥८५०॥
 कवि आखर साधा करे, बाधा चारु वेद।
 भेद बाहर की वेद में, कहिं कवि कर्म निषेद॥८५१॥
 दरिया सभ का दिल में, दर-दर रहा समाय।
 राम रहीम करीम कहि, कहु कवन पतिआय॥८५२॥
 वृक्ष बीज एक जानिये, डार पात फूल छांह।
 ऐसी जीव कहं मानिए, कर्ता उनमें नाहिं॥८५३॥

कर्ता कर्म ते भिन्न है, कर्म करावे काल।
 पंच भौतिक एक संग है, तहां बसे एक लाल॥८५४॥
 लाली लालन पाइए, डाली माली फूल।
 ऐना ऐना में दिसे, छवि संजीवनी मूल॥८५५॥
 पर्दे दर ने जानिया, बेपर्दा हाल हजूर।
 आशिक और माशूक है, तवे झमके नूर॥८५६॥
 फेरि आवे फिर जाएगा, बहुरि बसाओ गांव
 पांच पियादा साथ में, भला तुम्हारा नाव॥८५७॥
 पाँच पचीसो संग है, तीन मिलि एक नाव।
 वे प्रीति लागी बीच में, मूल ऊपर है ठांव॥८५८॥
 एके गुण अवगुण कहे, सात छेमा किए दोय।
 ए दुनु सिढ़ी हुआ, काम सुफल तब होय॥८५९॥
 जड़ जात पाहन सम, हृदय परी गौ चक्र।
 ग्यान छेनी सो काटिए, काटि किया तेहि वक्र॥८६०॥
 वहां आमृत सो सींचिए, तहां पलटे वो नाल।
 वंक आमृत सो खींचिए, कौड़ी से भव लाल॥८६१॥
 साच लिखा यह बाचिहो, नहिं चतुराई चोर।
 सतगुरु से परचे नहिं, कलपे नर्क अघोर॥८६२॥
 यम शासन बहुते करे, तपत शीला पर डार।
 यह चिन्हा यह चोर है, परी कोड़ों की मार॥८६३॥
 छापा है सतगुरु का, छीर न छुए कोय।
 आप छरा परिछन करे, आनन्द मंगल गाय॥८६४॥
 प्रेम मंगल हुलसत रहे, फूला कंज अनूप।
 चला प्रवाह सुधा सम, भया विमल निजु रूप॥८६५॥
 झूठि प्रीति मुख में बसे, झूठे भइगौ नास।
 मुख हृदय साचो बसे, तब छपलोके बास॥८६६॥
 पाजी पलक मुदे फिरे, सतगुरु से नहिं प्रीति।
 माया गुमान ते गर्व है, भव जहल होहिं अनीति॥८६७॥
 भव जल पानी मीन जीव, महा भर्म भव जाल।
 तीन लोक फिर आवहीं, शीश पटकि धरि काल॥८६८॥

आवत जात गर्भ में, चौरासी लक्ष जीव ।
 भरमत फिरे भवन में, कहां बिसारे पीव ॥८६६॥
 पिया-पिया करे पपीहरा, स्वाति जल है जीव ।
 बिछुरतहिं मिल जाहुगे, बहुरि लगाये वो ग्रीव ॥८७०॥
 पिया हमारे सुरमा, रन मंडे है खेत ।
 सनमुख से नहिं फिरहो, भला बना है हेत ॥८७१॥
 पिया हमारे सुरमा, हम सोहागिनि संग ।
 जब वोय रन जूझिहें, तब मिले एक रंग ॥८७२॥
 जाके साई कादरा, नारी भली नहिं होय ।
 जब रन ते फिर आवहीं, हंसी बैठि है रोय ॥८७३॥
 जुठो मीठो खात है, सभ मिल भये अजाति ।
 फिरे तो कारिख लाइया, यहां बैठि है पांति ॥८७४॥
 जहिं भेख से दरस करे, सो भेख डारेव तोरी ।
 मीन मांसु भोजन करे, दरसन परसन दुरी ॥८७५॥
 तीरथ गए फल एक है, सो फल आमृत संत ।
 वो फल भागे पाइए, विविध भेष बहु मंत ॥८७६॥
 तीरथ गए फल एक है, साधु मिले फल दुई ।
 सतगुरु मिले मुक्ति फल, आवागमन ना होई ॥८७७॥
 लव जाइ लपकत फिरे, झूठ कहन की बात ।
 आमृत रसना ना पीवे, स्वान सुकर की जात ॥८७८॥
 झूठे मिठो लागइ, साचो तीतो तात ।
 थोरे पवन में डोलत है, ज्यों पीपल की पात ॥८७९॥
 कवि आखर बंधा करे, वाते बहुत परींद ।
 एक मुआ एक मरही गे, झूठी वचन मानींद ॥८८०॥
 संत सनेही अधीन है, नर कवि बहुत बनाए ।
 संत कवि तुलसी दास है, राम चरित्र गुन गाए ॥८८१॥
 नर के कहे नारायण, नरे नरायण पास ।
 नर्क परन के कहत है, नरक परा वे विस्वास ॥८८२॥
 निर्मल जोति निर्लेप है, कबहिं न होत अनीप ।
 ऐन अंजीर निरझर देखे फनि मनि सदा सनीप ॥८८३॥

साढ़े तीन के बाहरे, साढ़े तीन के हृद।

मरन कहे माधो भला, वोय न मुआ एहद॥८८४॥

माधे मधुकर मन कहीं, जाकी इच्छा अनंत।

त्रिया एक पति बहुत हैं, कौन सुहागिनि कंत॥८८५॥

पूर्व लहरि जोगावहीं, कनहरिया के साथ।

पश्चिम व चंदा तानी है, ग्यान डोरी है हाथ॥८८६॥

कहे दरिया दरसन भला, परसन होय जो पीव।

सतगुरु चरन सनीप में, भला बनेगा जीव॥८८७॥

पुरान पढ़े पर घात करि, संगति साधु भनंत।

पांच तत्व परम तत्व है, सुनो सो शब्द वेदंत॥८८८॥

साधु भले भव तरन के, तरना ग्यान तरंग।

जोय परे वोय लहरि में, भला परसपर संग॥८८९॥

साधु बिना मत ना मिले, जीवन मृथा होय जाय।

नातो नास्ति इमि गत हुआ, फेरि कहां खोजहु आय॥८९०॥

साधु साहेब दिल एक है, जो बीच नहीं परे रेत।

भागर सो सागर नहीं, आगर बना सो संत॥८९१॥

दर्शन से परसन हुआ, परसहु पदुम अनूप।

जहां छाह तहा धूप है, यह सब माया सरूप॥८९२॥

मोहनी तो माया भइ, मोहनी माया तरंग।

जाते दाग न लागइ, समुझि परो प्रसंग॥८९३॥

संत कहत हैं वेद भला, वेद कहत है संत।

सतगुरु कहा ग्यान भला मिला सभन्ह का अंत॥८९४॥

संत संतोष विवेक करु, विरला साधु सरूप।

यह महि पर सब मगन है, रंग देखो सभ भूप॥८९५॥

साधुन से भागी फिरे, चक्षु विहुना अंध।

अघ पातक प्रबल हुआ, मुदा स्रवण का रंध॥८९६॥

दरसन करिए साधु का, पल-पल वृगसे प्रेम।

कांट उपर पैठा मिले, यह गुन अतीत अनेम॥८९७॥

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य है, शूद्र समेता जाति।

अविगति जीव पहिचानिया, नहीं काहु की पांति॥८९८॥

संशय मिटे साधु का, साधु तुम्हारे पास।
 एक व्रत निजु जानिया, चरन कमल की आस॥८६६॥
 भूखे के अन्न दीजिए, प्यासे दीजिए पानी।
 काया को कपड़ा दीजिए, कीजिए साधु की मानी॥८७०॥
 सुरा नाम धराइके, अब का डरते वीर।
 लड़िए तो दिल खोलके, सनमुख सहिए तीर॥८७१॥
 दरिया लक्ष गम्भीर है, साधु न होय उलंघ।
 एक सागर सभ बांधिया, भए लंकेश्वर भंग॥८७२॥
 परिमल पारस पवन है, गंध लगा दम अंग।
 चंदन के वंदन करे, रंध वाही को संग॥८७३॥
 एक पारस पारस बिना, शब्द बेधी हु संत।
 जड़ जनके जब बेधिए, इमि सतगुरु का मंत॥८७४॥
 कुमति पवन अभिअंतरे, हृदया को प्राकरम।
 निकट जाये बेधे नहिं, जानि परा वोह मरम॥८७५॥
 रगरत रगरत रंग करु, मल के किजै दूर।
 मल गये निर्मल हुआ, ग्यान बसा परिपूर॥८७६॥
 मोम हुआ मेहर किए, काढ़ी दधि से घृत।
 तब परिमल पारस भला, प्रीति करो नवनीत॥८७७॥
 कपट काटि कंटा काटेवो, काटेवो कुबुद्धि वन ठाट।
 सतगुरु दोष ना दीजिए, यम रोकेगा बाट॥८७८॥
 जो मुख में हृदय बसे, चरन कमल को ध्यान।
 फेरि पीछे पछताओगे, जब तन त्यागी हो प्रान॥८७९॥
 रसना प्रेम अमृत झरे, अनवा बहुत अनूप।
 षट्रस व्यंजन स्वाद है, मीन खावे सभ भूप॥८८०॥
 कामहि ते सभ होत है, काम ते पींड और प्रान।
 वाके मुख महं डालहिं, बिछुरा हरि का नाम॥८८१॥
 चमारकार भौ चाम ते, वकर कसाई वोय।
 मीन मांसु भक्षण करे, भव जल जात है रोय॥८८२॥
 आपु सुत का दुख देखे, दरद घनेरो होय।
 अजया सुत कहे मारिया, महा कल्पना होय॥८८३॥

आखर एके अंक है, बंक कमल के पास।
 चक्र छव प्रगट तहां, एहि विधि करु परकास॥६१४॥
 जोग भया सब रोग नहिं, ग्यान चेतनि कर चीत।
 जोग भोग से रहित है, सो हमारे मीत॥६१५॥
 लैला मंजनु के बीच में, फुदना एक है लाल।
 आशिक और मासूक है, बिसरी घर की माल॥६१६॥
 तोरे तो सुख जात है, जब देखिए तब खूब।
 वो फूल कोई ना तोरिए, सुनो वचन महबूब॥६१७॥
 दुनु का दिल पाक है, खाक में अटकी सुरती।
 अजब सुहागिनी सुन्दरी, ब्रह्मे रचे सो मुरती॥६१८॥
 बकि बकि थाके लोग सभ, ते ब्रह्मा की जाए।
 तनिक इधर नहिं ताकिए, बड़ी तुम्हारी माए॥६१९॥
 पुराकृत के अंक में, रही जुगल एक साथ।
 मन मूरख बूझे नहिं, बिकी खसम के हाथ॥६२०॥
 रस डाले रोशन हुआ, पारस हुआ जमाल।
 आछु गुलाब को फूल है, नैना हाल में हाल॥६२१॥
 खलक कहे हम पाक है, पाक हमारे कंत।
 वादिल या दिल एक है, भलो बनो है मंत॥६२२॥
 आशिक है तबि डर कहां, डरते आशिक जाय।
 लज्या चलि लजाई के, तब पिया प्रेम लोभाय॥६२३॥
 जनम भूमि के ठवर में अदल करे परचार।
 मंडी रहे मैदान में, ऐसी भक्ति पियार॥६२४॥
 जन्मभूमि के ठवर में, भागी कहा अब जाय।
 माथ उधारे लाज है, तब बन में पड़हु पराय॥६२५॥
 एक व्रत मल जरत है, बहुत मल है साथ।
 एक व्रत सतनाम है, बहुरी सोई गुन गाथ॥६२६॥
 जल सफेद मेघ श्याम, मन घेरे चहुं ओर।
 बरिसत बुंद अखंडित, गरजी करे घनघोर॥६२७॥
 भागे भूमि न पाइए, सनमुख रहिए मीर।
 मन साफ तेरा अदल है, सोई सराहना वीर॥६२८॥

राम राए हिन्दू भए, हिन्दू ना पति पाए।

अपावन पावन भए, रघुवर को गुन गाए॥६२६॥

यह कर्ता को नाम ही काम है, जो यह पक्ष करे सभ होए।

दोनों पक्ष के बीच में हिन्दू तुरुक गुन गाए॥६३०॥

आतम राम आदि ही होते, ज्यों लागीर सृष्टि सरूप।

यह तीनों तीन रंग है, भए अवध के भूप॥६३१॥

ब्राह्मण छत्रिय वैश्य नहीं, शूद्र ना कहिए ओए।

वोह कर्ता नहिं कर्म है, हिन्दु तुरुक नहिं होए॥६३२॥

कोई मलेछ काफिर कहे, कोई कहे राम रहीम।

बिसमिल्ला विष्णु कहे, केशो कहि करीम॥६३३॥

काफिर कहे मलेच्छ है, यह बातन में बात।

हिन्दू तुरुक के पक्ष में, वादिहिं जन्म गंवात॥६३४॥

मलेछ तुरुक मल खात है, अघ पातक है सोय।

वोह मल के वाटा करे, तब घट निर्मल होय॥६३५॥

काफर सो कुफुरान है, कर्म कनवड़ा सोए।

कुफुर तेजि काफर नहीं, भक्ति महातम होए॥६३६॥

मुसलमान इमान है, दर्दे है दुरवेश।

दर्द बिना मारे परे, कहे कोरान सन्देश॥६३७॥

हरि भगता हरि भगत में, पछ पतन नहिं होय।

एके पक्ष में पचि मुए, अजब कहानी सोए॥६३८॥

तुरुक तो तरक करे, भली सरिकत पाए।

सरा सरिकति छोड़ दे, दिल सो सिपित बनाए॥६३९॥

कसूटे का कसूटे रहा, बोध न वाट पुरान।

तालवे इल्म हाफिज हुआ, हरके कहा कुरान॥६४०॥

सोइ हजरत सोइ हरि है, इहां गीता कहा कोरान।

वोय मलेछ काफर कहे, यह कृतम को परवान॥६४१॥

माया मालती मधुकर, भला घानी लपटाए।

कंज पुंज के छोड़ि के, कहो कवन गुन पाए॥६४२॥

चिन्हो कंज कंजार पद, अमर बींद एक होए।

वा फूल भवरी न पावई, चली तवे दुख रोए॥६४३॥

मालिन मन एक रंग है, चुनि-चुनि गुंथे हार।
 बेइल सिफ्त सोभा बनी, उलटि लगा संसार॥६४४॥
 रवि उगे रजनी गई, तम त्रिमिर कहं खोए।
 तव तारा नहिं देखिए, भान कला सम होए॥६४५॥
 अंतर द्वीप के मध्य गये, एक जाम ठाढ़ा भए।
 कोर्निस करि सलाम, हुकुम भया उदय हुए॥६४६॥
 कहे दरिया दर्शन भला, परसी अमर पद सोए।
 ग्यान उदय जब होत है, गया कर्म सभ खोए॥६४७॥
 रंथ बहल तुरे घना, गज गर्जे वाहि द्वार।
 राज समाज सब देखिके, इनके लगा बेकार॥६४८॥
 इनकर कर्म है कालका, इन सभ करहिं विनाश।
 जो नृप जग में जाहिरा, करन चाहे तेहि नाश॥६४९॥
 तीन ताप यह तन सहे, ममिता माया समेत।
 मेदनी यह मद मातिया, तहां रचो है खेत॥६५०॥
 पड़ो तो पण्डित भले, आगम कहा ना ऐत।
 कुल सधारी पातक बड़ी, गले हेवाले ऐत॥६५१॥
 इनके चरित्र चिन्हें नहीं, यह चतुरन गुन गाए।
 मुनि पंडित घन वापुरे, रहट लगा भव आए॥६५२॥
 जो पाले परले करे, फल चिन्हें नहिं कोय।
 अजया सुत कहं पालहीं, बड़ो महातम होय॥६५३॥
 जब दया दरसे नहिं, परसे पाहन जान।
 निरजीव परजीव मारही, बड़ी महातम आन॥६५४॥
 मद माया ते मातिया, प्रभुता सबके पास।
 भक्त कहावन कठिन है, कर्म भया ग्रीव फांस॥६५५॥
 सो गमिल गाफील परे, छापा नहिं टक सार।
 मन सफा नहिं हजुर में हाजिर नाहीं गंवार॥६५६॥
 वेदहिं हद के पार है, जाग्रित जीद है जीति।
 करो विवेक विचारि के, सतगुरु से करु प्रीति॥६५७॥
 आम खास जहां तख्त है, तख्त मंद नहिं होय।
 हंसराज गुन ग्यान ते, बैठी अमरपुर सोय॥६५८॥

औगुन कहा औगुन कहा, पेद कहा औ ग्यान।
 साधु कहा असाधु कही, सुमिरन सांझ बिहान॥६५६॥
 आतम दर्स मत भला, चिन्हे शीतल तात।
 मोदा शील के बीच में, मोर पंख को गात॥६६०॥
 छोट मोट नहिं खोट है, यह जाने सब हीत।
 सभ एक सम जानिए, देवता होय या प्रेम॥६६१॥
 ब्रह्म ग्यान का फल यहि, दुआ देहि औ श्राप।
 तव खंडित करि जानिए, मोटा बड़ो सिर पाप॥६६२॥
 परे भवन में भर्मी के, चौरासी के बीच।
 ऐसो मता वही जाने दे, कहां आमृत कहा मीच॥६६३॥
 झूठी मुठी नहिं बाधिए, मरकट ऐसी साध।
 काल शिकारी ना चिन्हे, हुआ चक्षु का अंध॥६६४॥
 कवि आखर बांध करे, कथनी बहुत विरोग।
 छंद छंद प्रबंध है, दुरी बसत है योग॥६६५॥
 बाल कुमार तरुनो गए, वृद्ध भए पछिताय।
 चारों युग तन पर बीतो, अब कहु कवन उपाय॥६६६॥
 गाड़ेवो घन गहिरे भले, वसेवो झूठ के साथ।
 सुत कलत्र बैरी भए, चले मरोरत हाथ॥६६७॥
 साधुन के संग ना बसे, नहि सतगुरु से प्रीति।
 भागर को जल आचवन, बारुन चाहत नीति॥६६८॥
 मुख से सरबस देत है, चरन कमल की आस।
 हृदया दया ना उपजे, यम दारुन के पास॥६६९॥
 ऊपर खीरा चिकनी, बीज बिलगि विहराही।
 ऐसी प्रीति है जगत की, नेह निकट नहिं जाही॥६७०॥
 एक मुआ एक मरहिगे, मरने की परतीति।
 घरी-घरी डर खाइए, सतगुरु से करु प्रीति॥६७१॥
 निसु वास हिये में बसे, तन मन अरपेवो जीव।
 तैसे दुख-सुख कहन की, तथा कवन अब पीव॥६७२॥
 दुख दारुन दावा करे, दावा न करो पिया जानि।
 सुख सर्वदा दीजिए, दुःख के करिए हानि॥६७३॥

छत्र फिरे छपलोक में, छापा हमारे पास।
 सत सुकृत को जानवे, वहां पहुंचे दास॥६७४॥
 दास तुम्हारे पास है, निसदिन धरते ध्यान।
 गुन औगुन ना बुझिए, बड़ो तुम्हारे ज्ञान॥६७५॥
 कहे दरिया दर्शन भला, परसि अमर पद लिन्ह।
 खुशी तुम्हारी चाहिए, छपलोक तेहिं दिन्ह॥६७६॥
 जहां दया तहां धरम है, जहां लोभ तहां पाप।
 जाके हृदय साच है, तहां बसे वोय आप॥६७७॥
 साच शबद ही परिहरि, झूठा से करु प्रीति।
 साधु देखहिं उठि भागहीं, ऐसी जग की रीति॥६७८॥
 हरिजन हरि के जानहीं, हरि बाजी की मान।
 साधु चोर पहचानिए, जल पीवे यह छान॥६७९॥
 आंधर गुरु चेला बहिर, दुवो चले एक साथ।
 ना वोय देखा और वोय ना सुना, आरसी लिए हाथ॥६८०॥
 पहरु नगर चोराइया, कैसे करिए साध।
 जाहि भरोसे सूतिए, सोइ चला ले बांध॥६८१॥
 जग जागे चौकी करे, चिन्हे पहरु चोर।
 ग्यान रतन मनि हाथ में, कहनी भइगौ भोर॥६८२॥
 दुइ पर्वत के बीच में, एक निरंजन देव।
 अंजन तो देख नहिं, केहि विधि करिए सेव॥६८३॥
 पंच भौतिक यह देह है, पांच ततु गुन तीन।
 कहों कहा कर्ता बसे, रझां परा न चिन्ह॥६८४॥
 जल कहे न त्रिखा जात है, जब पीवे तब प्राण।
 भोजन कहे भूख ना गया, आतम की पहचान॥६८५॥
 जल बिनु मंजन किमि करे, भुआ धूरि लपटाए।
 जल पाये मंजन करे, सुनो सजन चितलाए॥६८६॥
 सजल जल अभिअंतरे, त्रिवेनी के घाट।
 अमी झरे चाखा करे, खुली गगन की वाट॥६८७॥
 यह तन माह चुभे जब, जीव में चुभे प्रेम।
 यह अमी कहं चाखिए, तहां भर्म नहिं नेम॥६८८॥

युक्ति जानि यह जोगिया, ग्यान इनते भिन्न।
 नहिं अजपा जप तप नहिं, वाके देखिए चिन्ह॥६८६॥
 वेद बाट यह घाट में, औघट कर्म विराग।
 आवागमन यह बीच में, नीच परा भौ दाग॥६८७॥
 शास्त्र गीता भागवत, पंडित खोजो मीत।
 कृष्ण कहां कर्ता दूजा, तासो करिए प्रीत॥६८८॥
 अगुन सगुन ते भिन्न है, अविगति अजर अमान।
 गर्भ वास बंधन परा, रंधन की आप आन॥६८९॥
 मुरलीधर का धरम है, कैसे पकरेवो केस।
 राधेपति रुकमणि रमन, पीछे भए नरेश॥६९०॥
 जरा मरन यह भर्म है, उपजनि विनसनि ऐत।
 वह आया नहिं जायेगा, बीज बोए नहिं खेत॥६९१॥
 है वह ब्रह्म भव आगरा, भग ते हैं भगवान।
 भव ते भिन्न वोय जानिए, सोतो पुरुष अमान॥६९२॥
 ऐगुन मम सभ संग है, गुनते कर्ते दीन्ह।
 जो वाही है जगत में, सो बड़े प्रमीन॥६९३॥
 दरिया नाम समुद्र है, हम दरिया को दास।
 दरिया भरो भरे नहिं, ग्यान करे प्रकाश॥६९४॥
 भक्ति भगत से भिन्न है, अजाति भले है संत।
 साधु मता गुन सरस है, यहि हमारो मंत॥६९५॥
 दरिया दर दरसन करो, विमल सदा गुन सार।
 रहनि रहो सो नाम ते, तेजो भरम विकार॥६९६॥
 तलखा तमवा ना पीवे, पियत है बहु वात।
 तीतो मीठो लागई, ताते यमपुर ज्ञात॥६९७॥
 माया सभन्हि मिलि त्यागिया, मान तेजी नहिं जाए।
 मान तेजि निर्मल हुआ, तो मीठो मोल बिकाए॥६९८॥
 सतनाम पति जानि के प्रीति करो नीति नेह।
 खेह गुड़ी उड़ि जाहिगे, वारिज वारि सनेह॥६९९॥
 सलिता सभे सुघट है, अवघट घर में जात।
 तरनी तजि कहा जाइहो, यम जीव करहिं निपात॥७००॥

दया धर्म दुनो भले, भगति भली निरलेप ।
 साधु संगति में फल भला, लागे न भव का लेप ॥१००४॥
 जौ आमृत नहिं मिले, तो विष तेहिं पिआय ।
 ठंडा बिना जग जात है, जीवे कवन उपाय ॥१००५॥
 विश्वास खेती करे, अन विस्वास नाश ।
 अनवां तन कह दीजिए, गाय चरेगी घास ॥१००६॥
 संत के अंत विवेक है, पारख निर्मल ग्यान ।
 और भेख भगवान सभ, जप तप सांझा ध्यान ॥१००७॥
 सतगुरु सेवक नीक है, वीकर तेजे समभाव ।
 जब हारे तब हारिदे, जब जीते तब दाव ॥१००८॥
 धन साहेब आमृत दियो, विष किन्हो सब दूर ।
 साली सुखा ते जल दियो, अन्न भया भरिपूर ॥१००९॥
 जीव कर्म काया बुल्ला, कुमति बेइली की बास ।
 दास कहावन कठिन है मद ममिता के पास ॥१०१०॥
 ताल मृदंग समाज करि, जगत रीझा वे सोय ।
 आपु रीझो तव हरि रीझो, भक्ति रहे नहिं गोय ॥१०११॥
 दोनों पक्ष के तेजि दे, गहो निर्मल निजु ग्यान ।
 पक्ष बुड़े निरपक्ष भला, कबहिं ना होखे हानि ॥१०१२॥
 जो बोले केशो ना बोले, बोले गीध का भाव ।
 यम फंदा तन लागिया, बिसरी गया सभ दाव ॥१०१३॥
 चेहुं चेहुं करते चिकरत फिरे, औ बिछुरा हरि का ध्यान ।
 सरगुन से यह प्रभु भूला, भले लोभाने दाव ॥१०१४॥
 हरि बाजी हरि के चिन्हो, चिन्हिए सतगुरु ग्यान ।
 सांझ सुबह उड़ि जाहुगे, कहां पिजरा कहां प्रान ॥१०१५॥
 दल या दहन किया, रहा न सुन्दर शरीर ।
 केहु जरा केहु गाड़िया, गोरी पड़ै नीर ॥१०१६॥
 हरनी सिखावे हिरन को, सुनो हमारे पीव ।
 विचारे वन में बसो, फांस डारेगा ग्रीव ॥१०१७॥
 परिपंची यह काल है, बोलता नाद गम्भीर ।
 तन मन सभ सुधि जाएगा, निफरी परेगा तीर ॥१०१८॥

मैं भला ममिता भली, माया भली है वाम।
 सांझ सुबह फिरता रहे, उदय अस्त अरु स्याम॥१०१८॥
 केता गर्व मिलाइया, और गज वाज समेत।
 घने मुए परि खाट पर, घने जुझे हैं खेत॥१०२०॥
 जड़ मूरख मन के चिन्हें, चिन्हो वेद का अंत।
 जिन चिन्हो सतगुरु चिन्हो, तब बनेगा संत॥१०२१॥
 जिन चिन्हा चित ठवर करी, अमर झलके सेत।
 भर्म छुटा भाजन फुटा, चिन्हो काल अरु प्रेत॥१०२२॥
 कर्ता नहिं कबीर है, दूजा धरा यह देह।
 बेबाहा बेकीमती हंही, तासो करिए नेह॥१०२३॥
 छोटा हुआ बड़ा हुआ, घट फूटे मरि जाय।
 नहिं हुआ नहिं होयगा, ताहि चरन लव लाय॥१०२४॥
 राम रहीम पद चिन्हो, साखी शब्द बनाय।
 सो कबीर कर्ता कहे, कर्म लगा भव आय॥१०२५॥
 गोरी कफन में आइया, सो कर्ता नहिं होय।
 नट वाजी चट खोलत है, त्रिगुन गया विगोय॥१०२६॥
 बूड़त है उतरत है, काटे सकल शरीर।
 बाजीगर कंह चिन्हिए, यह नट नहिं कबीर॥१०२७॥
 जो भूला सो भूलिया, भूली परा भव बीच।
 सतगुरु शब्द चिन्हें बिना, भया करम यह नीच॥१०२८॥
 नीच भया नाचत फिरे, बाजीगर के साथ।
 पांव कल्हाड़ी मारिया, गाफिल अपने हाथ॥१०२९॥
 चतुर चित कंह हित करु, प्रीति करो पद नेह।
 वाचित में चित चुभिया, सोइ सोहागिनि एह॥१०३०॥
 काशी माह कबीर है, तां कंह भये कमाल।
 यह मिथ्या नहिं बुझिए, बोलत शब्द रिसाल॥१०३१॥
 कोई कहे मुरदे भया, कोई कहे गैव ते आय।
 यह झूठो परिपंच है, साहब कहा गुझाय॥१०३२॥
 कमाली तो पुत्री भली, चित्र रचौ है मीत।
 भई भक्ति से सुन्दरी, भली लगा वो प्रीत॥१०३३॥

बेवाहा तब कहा, तनवा विनवा कीन्ह।

आवे जावे सरूप है, नहीं कर्ता को चिन्ह॥१०३४॥

सांच कहा साधु बुझे, शब्दे करो विचार।

वेद बुझे पंडित बुझे, कियो वचन निरुवार॥१०३५॥

जिन्दा पुरुष अमान हहीं, जीदा अदल चलान।

धरम दास कंठी तेजो, अदल किया पहचान॥१०३६॥

बिचे दुविधा पर गया, तिलक माला सभ कीन्ह।

पुरुष अदल नहिं चिन्हिया, रहा माया में लीन॥१०३७॥

तब मैं सीका मारिया, नया टकसार अमान।

ग्यान घोड़ा की पीठ पर, खैचा सेत निशान॥१०३८॥

दुख-सुख भव की रीति, अमर लोक निर्लेप है।

करु सतगुरु से प्रीति, मंगल सदा अनन्द है॥१०३९॥

सोइ पोखन पालिहैं, जिन्ह गर्भ रखा दस मास।

सोइ हमारे हित है, वाही चरन को दास॥१०४०॥

मम यह जन कंह वारिया, अपेव सकल शरीर।

कहे दरिया दर्शन भला, मेटेवो सकल तन पीर॥१०४१॥

दुर्जन जग में दुर्ग है, दिवि दृष्टि है मंत।

वाकह धुरी चटाइया, सोई हमारे संत॥१०४२॥

तस करके सभ बसि किया, तरुन होखे भा बृध।

जनके जानहिं आपना, बसे कमल के उरध॥१०४३॥

करो पपीहरा पिया पिया, रटन करो दिन राति।

अनल समान सरिता सभ, एक बूंद की आस॥१०४४॥

भक्ति करे तो गुन भला, ऐगुन जात बिगोय।

मन मैदा करि पिसिये, तवे सोहागिनि होय॥१०४५॥

भक्ति करे सो सुरमा, तन मन लज्जा खोय।

छैल चिकनिया बिसनी, वासे भक्ति ना होय॥१०४६॥

मैं सुमिरो तुम नाम के, कबहिं ना होत अकाज।

पतिवरता लंगी रहे, तो वाही पिया को लाज॥१०४७॥

पतिवरता के दुख घना, जाको व्रत है एक।

सुख चाहे व्यभिचारनी, जाके खसम अनेक॥१०४८॥

पतिवरता फाटो लता, नहिं गले में पोति।
 सभ सखियन में वोय दीसे, ज्यों हीरों की जोति॥१०४६॥
 पतिवरता के व्रत है, एक आस विस्वास।
 एक छोड़ि दुजा ना जानहिं, साहब पुरावहिं आस॥१०५०॥
 सदा आस सतगुरु की, आस न होखे भंग।
 सीप स्वाती जल दिवो, सकुच मीन पर संग॥१०५१॥
 सकुच मीन पारस संग, मोती हुआ अमान।
 ऐसे सतगुरु सरन में, प्रापित मुक्ति ठेकान॥१०५२॥
 मुक्ति मूल सतगुरु है, और जगत कोई नाहिं।
 ऐसे घने पहाड़ सभ, पारस धातु सो ताहि॥१०५३॥
 बड़ी शरन के सेइये, बड़ी बोल की आस।
 गुन औगुन न विचारिये, तुम चरनन को दास॥१०५४॥
 कवन जगावे ब्रह्म के, कवन जगावे जीव।
 कवन जगावे सुरति के, कवन मिलावे पीव॥१०५५॥
 बिरह जगावे ब्रह्म के, ब्रह्म जगावे जीव।
 जीव जगावे सुरति के, सुरति मिलावे पीव॥१०५६॥
 कवन पवन धरती बसे, सकलो सृष्टि लिए भार।
 कवन पवन वहिआ भये, साहेब के दरबार॥१०५७॥
 खम्भ पवन धरती बसे, सकलो सृष्टि लिए भार।
 सुरति पवन वहिआ भये, साहेब के दरबार॥१०५८॥
 सतनाम सर्व उदितं, जैसे दिवस पतंग।
 जो जन सुमरन ठानहिं, पछ होत न भंग॥१०५९॥
 सत सुकृत सुमरन करो, सभ विधि होत अनन्द।
 सकल सभा में संत शोभे, ज्यों उड़िगन में चंद॥१०६०॥
 हारे जम सतनाम से, हाथ डंडा दिन्हो डार।
 अमरलोक के जइहो संत ना आवहीं हार॥१०६१॥

सहस्रानां समाप्त